चतुर्थ अध्याय

डॉ. लाल के मिथक नाटकों के आधुनिक युगबोध

चतुर्थ अध्याय

डॉ. लाल के गिथक नाटकों में आधुनिक युगबोध

विभाग : ।

आधुनिकता - अर्थबोध और अर्थविस्तार

अर्थबोध :

हिन्दी साहित्य में आधुनिकता विषय पर कई विद्वानों ने लिखा है। जैसे आधुनिकता बोध और आधुनिकीकरण - डॉ. रमेशकुन्तल मेघ, आधुनिक भावबोध की संज्ञा - अमृतराय, आधुनिकता के पहलू - बिपीनकुमार अग्रवाल, परम्परा और आधुनिकता - डॉ. हजारीप्रसाद त्रिवेदी, तथा आधुनिकता और मोहन राकेश - डॉ. उर्मिला मिश्र आदि। प्रत्येक विद्वानों का कथन आधुनिकता के बारे में अलग-अलग है। आधुनिक शब्द का सर्व सामान्य अर्थ नूतनता से लिया गया है। ये नूतनता नित-नयी रहती है। कल की अपेक्षा आज नूतन है। परंतु आज भी कल बनने में देर नहीं। आज कल में ढलता रहता है। वर्तमान अतीत में बदलता रहता है तथा भविष्य वर्तमान में। इस प्रकार गतीशील जीवन बहता रहता है। जीवन के अन्ततक जीवन केवल एक व्यक्तितक सीमित नहीं एक पीढ़ी तक भी सीमित नहीं यह तो युगातीत जीवन है। आधुनिकता रोजमर्रा में भी नूतनता-परिवर्तन लाती है। हमारा जीवनकाल भी परिवर्तनशील है। शिशु जनम लेता है, फिर बाल्यावस्था, इसके बाद यौवन फिर प्रौढ़त्व और अन्त में बुढापा। इसप्रकार हमारा सामान्य भी परिवर्तनशील है, तो आधुनिकता में परिवर्तन अवश्य होना चाहिये।

हम अपना जीवन मर्यादित परिवेश में बीताते हैं। हमारे साथ समाज, जात, धर्म तथा रूढि इन सभी का संबंध बराबर बनता रहता है। समाज में धर्म तथा रूढ़ि के ठेकेदार अपने आपको उसी

समाज का आदर्श नागरिक मानते हैं, जहाँ सामान्य व्यक्तिपर अन्याय किया जाता हों। सर्वसामान्य व्यक्ति अपने आपको इसी परिवेश के अनुकूल बना लेती है। एखाद व्यक्ति यदि इस चाहरदिवारों के बाहर का बर्ताव करता है, तो उसे विद्रोही, समाज का घातक कहकर जात-बिरादी के बाहर कर दिया जाता है। इसे ही आधुनिकता का पहला कदम भी कहा जा सकता है। जो व्यक्ति रूढि या परंपरा के विरूद्ध कदम बढ़ाता है, आवाज उठाता है वह व्यक्ति आधुनिकता के नामपर समाज में बदनाम हो जाता है। इसका उदाहरण हम देख सकते हैं - म. ज्योतिबा फुले जी ने स्त्रीशिक्षा स्त्रीसुधार को आवश्यक मानकर स्त्रीशिक्षा शुरू की। परंतु उन्हें समाज ने कितना पिडित किया होगा यह बात हम जान सकते हैं। मतलब जो आधुनिकता के प्रति आकर्षित होकर कोई नया ठोंस कदम उठाता है तो प्रथम समाज से टक्कर लेनी पडती है।

रूढ़ि के विरूद्ध विद्रोह ही आधुनिकता का बीजवपन है। ऐसी दशा में जो आधुनिकता की ओर अग्रेसर होता है उसे आत्मसाक्षात्कार होता है और इसी आत्मसाक्षात्कार के बलपर वह समाज से रूढि-परंपरा से स्वतंत्र होकर अपने अनुभूतिपर आधुनिकता की ओर अग्रेसर होता है। वह व्यक्ति यथार्थता के निकट होता है। आधुनिकता मानव को मुक्ति के दर्शन कराता है। यह आधुनिकता एक रचनात्मक स्थिती है। उर्मिला जी का कथन दृष्टव्य है।

" आधुनिकता एक तरह की रचनात्मक स्थिति है जिसका अपना दर्शन है और जिसकी अपनी निजी वैचारिकता है। मनुष्य ने आत्म-साक्षात्कार के क्रम में स्वतंत्र होकर जिस दर्शन का प्रत्यक्षीकरण किया है उसे ही मिले जुले रूप में आधुनिकता कहा जाता है।"[1]

आधुनिकता एक प्रकार से स्वतंत्र विचारशैली है। आधुनिकता किसी समाज तक या व्यक्तितक सीमित नहीं रहती यह हमने उपर देखा ही है। आधुनिकता विशेषण के रूप में तथा कालके रूपमें प्रयुक्त होता है। इसे बुद्धिपरक विश्लेषण द्वारा भी देखा जा सकता है। समय की धारा बहती रही है और बहती रहेगी। समाज में राजनीति में धर्म में पायी जानेवाली आधुनिकता समय पर निर्धारित रहती है। राजनीति में इसका एक अच्छा उदाहरण मिल सकता है - महात्मा गांधी के समय में वे आधुनिक रहे, उनके बाद चाचा नेहरूजी आधुनिक बने, उनके बाद उनकी सुपुत्री इंदिराजी बनी उनके बाद उनका सुपुत्र राजीव गांधीजी आधुनिक बने। इसप्रकार समय की गोद में हर आधुनिकतावादी सो जाता है। इसका मतलब आधुनिकता सो गयी या खत्म हो गयी ऐसी बात नहीं तो वह आधुनिक

व्यक्ति विशेष अतीत में खो गया, उसका चरित्र हमारे बीच मौजूद है परंतु व्यक्ति नहीं। आधुनिकता किसी व्यक्ति का एकाधिकार नहीं वह तो समाज में अधिष्ठित रहेगी।

आधुनिक युग की बातो में आधुनिकता आती है। युग का काल के संदर्भ में आधुनिक शब्दांकन उचित है, पर उसमें घटित घटनाओंके सन्दर्भ को आधुनिक कहा जा सकता है। प्राचीनता का परिवर्तन ही आधुनिकता है।

" वस्तुतः आधुनिकता एक विशिष्ट एवं मिश्रित अवधारणा है, जिसका निर्माण अनेक तत्वों के सम्मिलन से हुआ है। इनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व है - देशकाल के साथ जीवन्त एवं सचेतन सम्बन्ध। "[2]

आधुनिकता की पहचान बुद्धिवादिता की पहचान है। वर्तमान के प्रति सजग रहना ही आधुनिकता का दर्शन है। बौद्धिक व्यापार का बिना आधुनिकता ज्ञान असंभव है।

" आधुनिक का अर्थ व्यापक और गत्यात्मक ही मानना चाहिये। युगबोध, परम्परा का संशोधन, जीवन के वैविध्य की स्पृहा, अपने पर्यावरण के माध्यम से आत्मसिद्धि-विकास की आकांक्षा आदि ही उसके सही लक्षण है। "[3]

हमने आधुनिकता का अर्थ देखते समय आधुनिकता का संबंध समाज, रूढि, परंपरा तथा संस्कृति के साथ बहुत ही निकटवर्ती है यह देख लिया। संघर्ष का नाम ही आधुनिकता को स्वीकारता है। आधुनिक मनुष्य परीक्षण करता रहता है और निजी कमजोरियाँ पहचानकर उसे बदलता रहता है। यही आधुनिक भावबोध का लक्षण है।

" आधुनिक दृष्टि आधुनिकता के बिना अकल्प्य है। और यह आधुनिकता रोमांटिक भावधारा को ठीक-ठीक पर्यवसित किये बिना विकसित नहीं हो सकती। अपने वर्तमान के प्रति के प्रति तीव्रतम सजगता आधुनिकता का केन्द्रीय तत्व है। मूल्य के रूप में विभावित आधुनिकता इतिहास की प्रक्रिया का अद्यतन चरण है। "[4]

भावधारा-भावबोध-आत्मज्ञान तथा वर्तमान के प्रति जागरूकता ये सब आधुनिकता के पहलू है। इन्हीं से गुजरकर आधुनिकता समाज में प्रतिष्ठापित होती है। कभी कभी यह आधुनिकता समाज अमान्य करता है। परंतु समाज के कुछ ज्ञानी लोग धीरे धीरे इसे अपनाकर यही आधुनिकता सर्वमान्य हो जाती है। उदा. के लिये भारतीय संस्कृती में सतीप्रथा थी परंतु धीरे-धीरे यह समाप्त हो

गयी।

आधुनिकता याने वर्तमान का बोध नितांत आवश्यक है। आधुनिक बोध का अर्थ ही वर्तमान वोध है। युग तो परिवर्तनशील होते हैं, परंतु वर्तमान प्रवाहमान होता है। नूतन विचार दर्शन ही आधुनिकता है। नवीन जीवन पद्धति का अनुसरण ही आधुनिकता है। पूर्णरूप से भोगा हुआ आधुनिक हो सकता है परंतु वर्तमान हर समय पूर्ण रूप से नहीं भोगा जा सकता। वर्तमान बहता हुआ जल है उसे आसानी से नहीं पकडा जा सकता। भविष्य तो कल्पनाओंद्वारा भी जीया जा सकता है परंतु वर्तमान की अनुभूति सच्ची होती है। अतीत नहीं बदला जा सकता परंतु भविष्य के विषय में विचार करके परिवर्तन किया जा सकता है। आधुनिकता का बोध तभी हो सकता है, जब अतीत से संवरकर वर्तमान का अनुभव किया जाय।

" इतिहास बोध और अतीत के प्रति एक सामान्य विचारधारा-जो वास्तव में वर्तमान का बोध है-व्यक्ति की अपनी विशेषता है-यही आधुनिक बोध है। "[5]

तथा

" आधुनिक विचारक आधुनिकता को ' संकर का बोध ' मानते हैं। उनकी दृष्टि में संकट का बोध यह है कि, विज्ञान ने पारलौकिक सत्ता को आधारभूत मानकर चलनेवाली मध्ययुगीन धार्मिक दृष्टि को तोड दिया, पर वह मानव सत्य को समग्रता की अपेक्षा खण्ड रूप में यांत्रिकता के साथ ही देख सका है। "[6]

इस प्रकार आधुनिकता को स्वीकार करना वर्तमान का बोध है और आनेवाले संकटों का सामना करना ही बौद्धिकता का लक्षण है। मानव को अपने आपको पहचानने में समर्थ होना चाहिये। मानव को अपने मूल्यों को गिराना नहीं चाहिये उसे तत्काल पहचानकर स्वीकार करना ही उचित समझा जाता है।

अर्थविस्तार :

आधुनिकता का अर्थ देखनेपर उसका विस्तार किस प्रकार हुआ है यह देखना जरूरी है। आज विद्वानों ने आधुनिकता का संबंध विज्ञान, समसामयिकता, धर्म आदि कई बातों से लगाया है इसप्रकार आधुनिकता का अर्थ विस्तार होता रहा। हमारा भारत देश वैज्ञानिकता के क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है। सामान्य मनुष्य भी विज्ञान से प्रभावित है। वह अपने जीवन में उसे स्वीकार भी कर चुका है।

यांत्रिकता का युग होने से मनुष्य उसमें घुल-मिल गया है। क्यों कि इससे मनुष्य सुविधा भी पाता है। उसी प्रकार मनुष्य का रंजन भी विज्ञान द्वारा होता है जैसे चलत् चित्रपट, टेलिविजन, रेडिओ, टेपरिकॉर्डर आदि। इस प्रकार विज्ञान द्वारा मानव को सुख सुविधा प्राप्त होने-सेभी यही आधुनिकता का द्योतक है।

" वैज्ञानिक-जीवनधारा आधुनिकता की धारणा है। वैज्ञानिक उपलब्धियों से मनुष्य के जीवन में आधुनिकीकरण आया है। हमारे बदलते हुए दृष्टिकोण विज्ञान से प्रभावित है। "[7]

सामाजिक जीवन और वैयक्तिक जीवन का टकराव होता है, तभी मनुष्य पथभ्रष्ट होने की संभावना नजर आती है, परंतु वास्तव में वह पथभ्रष्ट नहीं होता, वह तो आधुनिकता को स्वीकारता है। प्रचलित मूल्य, रूढ़ि संस्कृति के विरोध में जानेवाला व्यक्ति विद्रोही-प्रवाह के विरूद्ध बहने का प्रयास करता है। कभी कभी ऐसी स्थिति में वह समाज बाह्य भी किया जाता है, परंतु समाज किसी मर्यादित क्षेत्र का नाम नहीं, उसे कही न कही सहारा मिल ही जाता है। इसप्रकार विज्ञान के जरिये आधुनिकता को स्वीकारना भी एक प्रकार का विद्रोह माना गया है। विज्ञान भी वर्तमान के जैसा गतीशील है। संस्कृति का बंधन तथा रूढिवादिता धीरे धीरे शिथील हो जाती है। आधुनिक मनुष्य विज्ञान के सहारे जीना चाहता है। यथार्थता के निकट रहकर अपने आपको परखकर जीना चाहता है। पर कभी कभी यही जीवन आनास्था का धरातल तैयार करता है।

विज्ञानद्वारा आधुनिकीकरण, औद्योगिकरण, नगरीकरण यांत्रिकीकरण हो रहा है। संयुक्त परिवार बिखरकर एकक परिवार हो गये हैं। दिन-ब-दिन व्यक्ति अकेला और अकेला होता जा रहा है। स्त्रियों को अधिकारों में वृद्धि होती जा रही है। औद्योगिकरण घनी बस्तियों, श्रम समस्या तथा दुर्घटना में प्रतिफलित हो गया है। इससे आर्थिक व्यवस्था का -हास हो रहा हे। यह सत्य जान लेना आवश्यक है। व्यक्ति को अपने व्यक्तित्वपर गर्व-सा होने लगा है। वह समाज को इतनी महत्ता नहीं देता जितनी अपने आप को। इसमें व्यक्ति अपने आपको ही खोता जा रहा है।

समसामयिकता भी आधुनिकता से निकवर्ती है। समसामयिक साहित्य आधुनिकता से परिपूर्ण भले ही न हो, परंतु आधुनिकता से प्रभावित जरूर होता है। समसामयिक साहित्य में वस्तुव्यापकता तथा विषयव्यापकता रहती है। समसामयिक लेखन में सामाजिक दुरावस्था और समस्या का चित्रिकरण होता है। सामयिक परिवेश में सामाजिक जीवन को नवचेतना प्रदान करने का कार्य आधुनिकता करती है। यह आधुनिकता जीवन साधन बनकर ही समाज में फैलती है।

" लोगों की मान्यता है कि धर्म प्रगति में अवरोध उत्पन्न करनेवाली बाधा है। समाज वैज्ञानिक-परिवेश में सांस ले रहा है। व्यक्ति अन्तः और बाह्य रूप से इतने अधिक संघर्ष में गुजर रहा है कि उसे धार्मिक मान्यताएँ जीवन को और जटिल और विषम बना देने वाली लगती है। "[8]

लोगोंका धर्म के साथ रिश्ता टूटता सा दिखाई दे रहा हे। धर्म अब जीवन को गती नहीं दे सकता वरन् विज्ञान द्वारा ही जीवन गतीमान हो सकता है। धर्मोपासना अब पिछड़ सा गया है। लोगों को नित नूतन जीवन, सुख के आयाम तथा सुविधा की लत सी पड़ गयी है इसलिये उन्हें विनाकष्ट बिनासाधन आराम चाहिये, परंतु ये बात तो नहीं हो सकती। और जहाँ जहाँ ऐसी सुविधा है वहाँ वहाँ रोग फैलता है। शरीर को कुछ कष्ट नहीं तो वह रोग का भंडार ही बनेगा। तर्क के द्वारा सबकुछ नहीं प्राप्त किया जा सकता। शारीरिक श्रम की आवश्यकता भी जरूरी है। आधुनिकता केवल दर्शन, तर्क, विज्ञान या धर्मपर आश्रित नहीं, उसे तपस्या की आवश्यकता है।

सबसे पहले व्यक्ति को आत्मपरीक्षण करके उसके अनुसार व्यवहार करना चाहिये। व्यक्ति चिंतनशील होते हैं। अपने अस्तित्व को ध्यान में रखकर उसे संकटों का सामना करना चाहिये। वैचारिक या दार्शनिक स्तरपर अस्तित्व का चिंतन ही समस्यामूलक है। समाज या समूह में रहकर ही अस्तित्व का चिंतन किया जाना चाहिये। व्यक्ति समाज से दूर रहकर अगर अपना अस्तित्व खोजने लगेगा तो उसे यथार्थता से दूर ही समझना चाहिये। समाज में घटित व्यवहार व्यक्ति को परखने का अवसर देती हे। मनुष्य स्वभावतः परस्पर मानवीय संबंधों को बोध और आत्मीयता के बीच झगड़ता रहता है। विज्ञान ने व्यक्ति की आशा को सांतवे आसमान पर चढ़ा रखा हे। परंतु इससे मानव का नुकसान ही हो रहा हे। बेकारी बढ़ रही है। इसप्रकार मानव दो भागों में बंट सा गया है। एक तरफ विज्ञानद्वारा सुविधा पाकर लोग ऐशोआराम पाते है तो दूसरी ओर भूख-हडताल-बेरोजगारी बढ़ती जा रही है। भारत की जनसंख्या भी दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है।

" भारत में शिक्षित बरोजगारों की अधिकता हैं। यदि वे संवेदनशील है तो सही अर्थों में वे ही निर्वासित है। वे अपने घर सन्दर्भ से कट गये है, जहां के लिये वे तैय्यार है वहाँ उन्हें प्रवेश नहीं है। "[9]

इसप्रकार व्यक्ति अगर दिशाहीन हो गया तो वह किसी भी प्रकार के विद्रोह को तैय्यार होगा। कालान्तर में यही विद्रोह आधुनिकता बन जाती है और सामान्य जनजीवन में रहती है।

यह व्यक्ति को अनुभव से ही प्राप्त होती है। व्यक्ति की कहानी दिन-ब-दिन अलग रूप ले रही है। करूणा, विसंगति, निरर्थकता आदि के जाल से बचकर उसे अपना जीवन बीताना पडता है। अपनी समस्याओं में उलझा हुआ व्यक्ति आत्मविकास कर पाने में असमर्थ है। फिर व्यक्ति विन्मुख होकर फिर पुराने रिवाज, रूढ़ि या परंपरा प्रिय होने लगेगा और धीरे-धीरे आधुनिकता अपना मूलअर्थ खो बैठेगी। आधुनिकता निरंतर परिवर्तनशील होने के कारण उपर्युक्त स्थिति की नौबत सामान्यतः नही आती और समाज परिवर्तीत होता रहता है। कल का गरीब आदमी आज अमीर होगा और आज का गरीब आदमी कल अमीर बनेगा इसी आशावादिता पर प्रत्येक व्यक्ति अपना जीवन बीताता रहता है। आधुनिकता तो किसी सनसामयिक स्थिति का नाम नही है, वह तो एक तरह की रचनात्मक स्थिति है। आत्मसाक्षात्कार के समय जिन अनुभूतियों का एहसास होता है वही कहीपर आधुनिकता का भी आभास रहता है। आधुनिकता प्रगतीशील चेतना है। यही चेतना व्यक्ति को यथार्थता के भी निकट लाती है। सच देखा जाय तो आधुनिकता एक अन्वेषण है।

इसप्रकार आधुनिकता का अर्थबोध सामान्य जन-जीवन से लेकर व्यक्तितक होता रहता है। और आधुनिकता का अर्थविस्तार भी विविध क्षेत्र में दिखाई पडता है। अगर उसके परिणाम का मूल्यांकन करने बैठे तो यह लघु शोध प्रबंध दीर्घ हो जाने में देर नही लगेगी। हमें केवल आधुनिकता के अर्थबोध तथा अर्थ विस्तार तक ही सीमित रहना है।

आधुनिकता और परंपरा :

हमने पीछे आधुनिकता का अर्थ देखा, इससे यह जाहिर होता है कि आधुनिकता और परंपरा परस्पर एक दूसरे के पूरक शब्द है। परंपरा के बिना आधुनिकता का आधुष्ठान कतई नहीहो सकता। रूढि-परंपरा तो समाजाधाष्टित होते है। परंपरा समाज के जरिये या परिवार के जरिये व्यक्ति स्वीकारता है। पुरानी पीढ़ी नयी पीढ़ी को जो कुछ अमानत देती है उसका पालन नयी पीढ़ी करती हे। नये पीढ़ी में से एखाद व्यक्ति उस का पालन करने से हिचकिचाकर अपने नये मूल्य स्थापित करने का प्रयास करता है इसे ही आधुनिकता का अविष्कार कहा जा सकता है। पुराने तत्व नये तत्व में बदलकर नये आयाम स्थापित करते हैं। यह बात बहुत ही सहज भावना से हो जाती है। परंपरा सहज भावसे आधुनिकता बन जाती है और कालान्तर में यही आधुनिकता परंपरा बन जाती है। यह आधुनिकता परंपरा बनने में समाज का, परिवार का, सहयोग आवश्यक है। कभी कभी यह बात यह

आधुनिकता स्वीकृत होनेमें विज्ञान की भी सहायता होती है। व्यक्ति तो अतीत का सर्वेक्षण करके वर्तमान में जीता है। वर्तमान की समस्या अतीत की समस्याओं से ज्यादा जटिल एवं कठिन होती है। इसे सुलझाने के दरम्यान व्यक्ति अपना उद्दिष्ट खोने की संभावना रहती है। परंतु सामान्यतः ऐसा नहीं होता। व्यक्ति अपने आपको परिस्थिती के अनुरूप ढालकर जीने की कोशिश करता है। इसप्रकार व्यक्ति आधुनिकता को सहज स्वीकारता है परंतु वह समाजाधिष्ठित होनी चाहिये।

परंपरा तो जीवन प्रक्रिया है, परंतु आधुनिकता जानबुझकर स्वीकार की हुई है। व्यक्ति जिस परिवेश में जीवन बीताता है इसकी मान्यताओं को त्यागना या विद्रोह करना इतना आसान कार्य नहीं है। व्यक्ति की आवश्यकता तो हरघडी नयी नयी रहती है, उसके अनुरूप व्यक्ति आपने आपको काबिल रखने में कामयाब रहा तो वह आदर्श नागरिक कहलाएगा। जिसप्रकार आधुनिकता का सम्बन्ध अतीत वर्तमान तथा भविष्य के साथ अटूट होता है, उसी प्रकार परंपरा का भी। परंपरा तो एक दूसरे से, दुसरे तीसरे से चलती हुई परिक्रमा करती है, आधुनिकता इसी परिक्रमा के अन्दर व्यक्ति को जोड़नेवाली कडी होती है। यह कडी भी निरन्तर गतिशील रहती है।

परंपरा और आधुनिकता दोनो भी गतीशील होते हैं परंतु परंपरा विचारों में रहती है तो आधुनिकता आचारों में। परंपरा के लिये आस्था की आवश्यकता रहती है, आधुनिकता के लिये नवीनता की। नवीनता अपनाने में कुछ समय की आवश्यकता रहती है परंतु आस्था तो व्यक्ति के अंतरमन में अधिष्ठित रहती है उसे स्वीकार करनी, अंगीकृत करनी नहीं पडती। क्योंकि व्यक्ति की आस्था जल्दी टूटती नहीं। यथार्थता में आधुनिकता और आधुनिकता में यथार्थता निहित रहती है। यथार्थता भी परिवर्तन-शील रहती है।

" परंपरा के लिये आस्था का अवलम्ब आवश्यक है तो आधुनिकता में विवेक, प्रमेय और यथार्थतापरक दृष्टिकोण की गुंजाईश है। इसतरह आधुनिकता परंपरा की एक नयी कड़ी, नूतन सजग चेतना और संश्लिष्ट विचार प्रकृति है। परंपरा आधुनिकता का महत्वपुर्ण आधार होने के साथ-साथ उसके विकास के लिये खाद है। "[10]

परम्परा के लिये आस्था की आवश्यकता है। तथा आधुनिकता के लिये बुद्धि की यह हमने ऊपर देख लिया है। इन दोनों में यथार्थता की नीतांत आवश्यकता रहती है। आधुनिकता परम्परा के मूल आधार पर ही विकसित होती है। विकसित रूपमें पायी गयी आधुनिकता परम्परा बन जाती है।

इसप्रकार परम्परा आधुनिकता एक दूसरे के पूरक है। नये मूल्य और पुराने मूल्यों की टकराहट होती है तो उससे फूट निकलती है आधुनिकता। व्यक्ति समस्या से समाधान प्राप्त करने का तरीका ढूँढता रहता है, यह तरीका उसे परम्परा से हांसिल होता है तो कभी आधुनिकता से। परंतु व्यक्ति उसे अपनी सुविधा के अनुसार ग्रहण करता है।

परंपरा कुछ कालतक स्थिर रहती है, परंतु आधुनिकता की कोई कालमर्यादा नहीं होती। देखते, देखते आधुनिकता बदल सी जाती है। परीवर्तन में वैज्ञानिक दृष्टि से निहित होने के कारण परम्परा में तुरंत या जल्दि-जल्दि परिवर्तन संमत नहीं होता। परंतु आधुनिकता में बुद्धि का भाग होने के कारण त्वरीत परिवर्तन हो जाना संभव है। इसप्रकार आधुनिकता और परंपरा निरन्तर एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं। परंपरा और आधुनिकता का घनिष्ठ संबंध है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने बुद्धिवान आदमी के पैर के साथ मार्मिक शब्दों में उन दोनों का परस्पर संबंध व्यक्त किया है - उनके शब्दों में " बुद्धिमान आदमी एक पैर से खड़ा रहता है, दूसरे से चलता है। यह केवल व्यक्ति सत्य नहीं है, सामाजिक संदर्भ में ही यही सत्य है। खड़ा पैर परंपरा है और चलता पैर आधुनिकता। "[1]

आधुनिकता और परम्परा के पारस्परिक संबंध को निम्नांकित आलेख द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

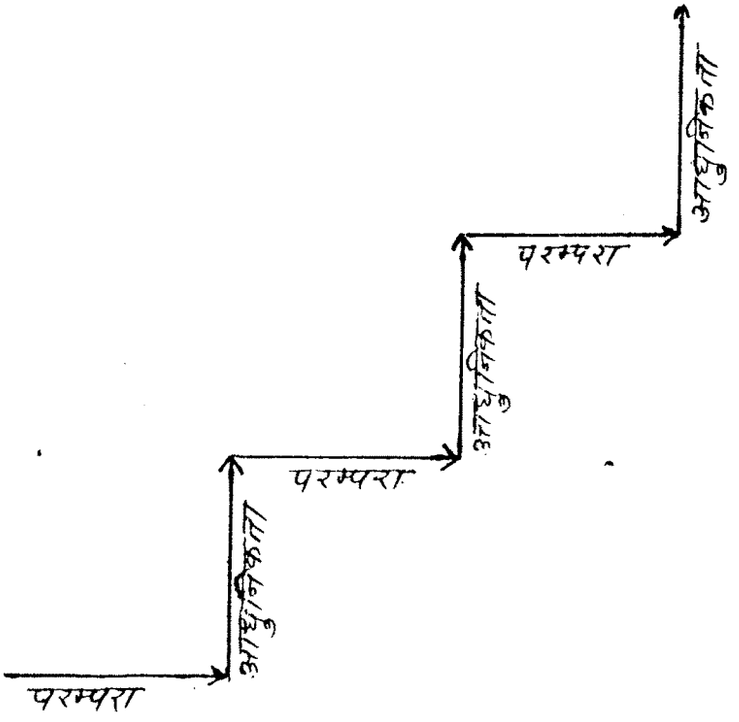

आधुनिकता और इतिहास बोध :

इतिहास घटित घटनाओं का भंडार रहता है। अतीत और इतिहास में अन्तर केवल इतना ही है कि अतीत केवल यादों पर जीवित रहता है परंतु साहित्य में उसे स्थान नहीं रहता। परंतु इतिहास का स्थान साहित्य में अद्वितीय है। घटनाक्रम बहुचर्चित होकर साहित्य में विराजमान होते हैं। उसे इतिहास से नामांकित किया जाता है। इस घटनाक्रम के पुरूष इतिहास पुरूष बन जाते हैं। परंतु ये आधुनिक नहीं कहला सकती। इतिहास से विद्रोह ही आधुनिकता की स्वीकार है। धर्म के टूटते विश्वास एवं इतिहास से टूटते संदर्भ ही आधुनिकता की पहचान है। सामाजिकता तो आधुनिकता और इतिहास दोनों में निहीत रहती है।

भविष्य को बदलना या अपनी सुविधा के अनुरूप ढालना व्यक्ति के बस की बात है परंतु इतिहास को बदलना व्यक्ति के हाथ में नहीं है। इतिहास बोध को आधुनिकता में ढाल कर उसे नया रूप देकर आधुनिक बन सकता है। व्यक्ति परम्परा को पूर्ण रूपसे उपभोग कर उसे इतिहास बना देता है। फिर नये अन्वेषण की खोज में आधुनिकता को स्वीकार करता है। कभी-कभी व्यक्ति प्रतिभा सम्पन्न होने से अपने आप को विधाता समझने लगता है। परंतु मनुष्य कभी भी विधाता नहीं बन सकता, यह बात मनुष्य को ही मालूम नहीं। विधाता का मतलब पूर्ण मनुष्य दोषरहित सर्वगुणसम्पन्न व्यक्ति। इस भूतलपर ऐसा व्यक्ति नहीं मिल सकता। जो बहुत गुणों से युक्त है वह साधु-सन्त या महात्मा बन सकता है फिर वह भी काल की आड में समाप्त हो जाता है।

इतिहास परंपरागत मिथ्याचारों से भरा पड़ा है। इतिहास से छुट्टी लेकर व्यक्ति विज्ञानद्वारा आधुनिकता की ओर उन्मुख हो रहा है। इतिहास बोध का अर्थ केवल इतिहास का अनुकरण मात्र नहीं। इतिहास का सर्वेक्षण करके उसमें उचित बदलाव लाकर उसे युग के अनुकूल बनाना ही बुद्धिवादिता का प्रतीक है। आधुनिकता भी बुद्धिवादितापर निर्भर रहती है। इस प्रकार आधुनिकता को स्वीकृत करके इतिहास में बदल लाना या इतिहास में बदल करना ही इतिहास बोध का प्रतीक माना गया है।

" आधुनिकता को इतिहास से अलग नहीं किया जा सकता। क्योंकि, इतिहास तथ्यों और घटनाओं के अक्ष में नही बन्द है। इतिहास मानव द्वारा निर्मित, आकांक्षित विचारित वह यथार्थ अनुभूति है जो कालक्रम से बंधकर इतिहास बन जाता है। "[12]

इतिहास, विज्ञान, धर्म, परम्परा तथा रूढ़ि सभी मानव निर्मित है। मानव-समाज में पलता है। इसप्रकार उन सभी का संबंध भी समाज से आपने आप आ जाता है। धर्म और इतिहास का संबंध भी अटूट है परंतु धर्म का आध्यात्म के साथ भी संबंध है, परंतु इतिहास को आध्यात्म मंजुर नहीं। क्योंकि, इतिहास सत्यानवेषी है तो अध्यात्म विश्वासमूलक। जब व्यक्ति को वैज्ञानिक दृष्टि प्राप्त होती है तो वह भी विश्वासमूलक आध्यात्म के सहारे नहीं जी सकता और इतिहास के सहारे आधुनिकता की ओर आकर्षित होता है। इतिहास में विश्वास की आवश्यकता नहीं रहती, उसे तो सत्यता की आवश्यकता रहती है। इतिहास मानव के जीवन की सत्यता का सार रहता है तो आधुनिकता मानव के भविष्य का सार। इतिहास बोध हो जाने पर उसमें जो त्रुटियाँ नजर आती है, उसे व्यक्ति अपने रोजाना जिन्दगी में पूरी करने की कोशिश करता है।

मानव के मन में आशा-आकांक्षाओं की भरमार रहती है, उसे यथार्थता का भी सामना करना पड़ता है। जीवन सुविधा पुर्वक बीताने की तमन्ना भी रहती है, इस सभी जंजाल में वह आधुनिकता का स्वीकार करके अपना जीवन यापन करता है। कालक्रम से बंधित घटनाएँ इतिहास से अभिहित की जाती है, परंतु आधुनिकता न केवल अनुसरणीय स्वीकार्य या स्वतः निर्मित होती है। इसका इतिहास से संबंध आवश्य रहता है, परंतु वह संबंध निरंतर बना रहेगा यह नहीं कहा जा सकता। व्यक्ति ऐतिहासिक मूल्यों को आधुनिक मूल्यों में परिवर्तित करके अपने सुविधा नुसार जीने का प्रयास करता है। इसी प्रयास में वह उत्कर्ष की ओर बढ़ता रहता है। इतिहास के मूल्य आधुनिक मूल्यों से जादा कीमती हैं क्योंकि उसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा। आधुनिकता में निरंतर परिवर्तन अपेक्षित रहता है तो इतिहास बोध की सहाय्यता से व्यक्ति आधुनिकता को स्वीकार कर सकता है।

आधुनिकता और मिथक नाटक :

हिन्दी साहित्यिक विधाओं में सबसे महत्वपूर्ण विधा है नाटक। हिन्दी नाट्य-साहित्य की सृष्टि उन्नीसवीं सदी माना जाता है। भारत में उस समय पुनरूत्थान का जोष आया हुआ था। आरंभिक काल में नाटकों में जादा महत्वपूर्ण नाटक नहीं लिखे गये क्योंकि रंगमंच की कमी थी। नाटक का रंगमंच से गहरा रिश्ता है। रंगमंच के बिना नाटक यह कल्पना अतर्क्य है। आधुनिक काल माने स्वातंत्र्योत्तर काल में नाटकों का निर्माण बहुत जादा हो गया। तब तक नाटकों के वर्णित विषयों में भी तबदिली आ गयी थी। बदलते जीवन मूल्य रचनाकारों को नयी प्रेरणा दे रहे थे। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक सभी स्थितियों में परिवेश में आधुनिकता कूट-कूटकर भरी हुअी थी। इससे भी आगे

बढ़कर कुछ नाटककारों ने पुराने प्रतीमानोंपर नयी चेतना की व्याख्या को मिथक नाम से अभिहित किया और इसप्रकार मिथक नाटकों की रचना हुअी। भिन्न समाज की भिन्न आधुनिकता होने से साहित्यकार की अनुभूति से ही प्रसूत होनेवाली रचना निश्चित रूपसे अभूतपूर्व होती है।

मिथक का अर्थ तथा अन्य सम्बन्ध हमने पहले अध्याय में ही देख लिया है। आधुनिक काल में ही मिथक की कल्पना प्रसूत हुयी है इसलिये आधुनिकता मिथक से तथा मिथक आधुनिकता से अभिन्न है। मिथक का प्रयोग प्रथमतः कविताद्वारा किया गया, परंतु बाद में रचनाकारों ने इसे नाटक में भी अधिष्ठित किया। जिस में उल्लेख्य नाम है जगदीशचंद्र माथुर, सुरेंद्र वर्मा, मोहन राकेश, नरेश मेहता, तथा लक्ष्मीनारायण लाल। इन्होंने अपने नाटकों में पुराने मिथक को नयी व्याख्या प्रस्तुत करके आधुनिकता का उच्चतम उदाहरण प्रस्तुत किया है। वैसे मिथक केवल प्रतीकों की संग्रह मात्र नहीं, इसमें कई आद्यरूप देखने को मिलते हैं। मिथक एक कोरी कल्पना मात्र भी नहीं अपितु मिथक सामूहिक विचार प्रक्रियाओं, शाश्वत सत्यविश्वासों तथा क्रियाओं आदि से भी साक्षात्कार कराती है। मिथकीय पुनर्रचना दूरगामी सूक्ष्म सांस्कृतिक सुत्रों से बिखरे यथार्थ को पुनः नयी-आधुनिक-अर्थविपत्तियाँ तथा संकटों को समेटकर नयी युगित धारणा को नये आयाम प्रदान करती है।

" युग सत्य मिथक के आशय एवं उसके सूक्ष्म सूत्रों से प्रतीकीकृत होकर वर्तमान परिवेश की परिस्थितियों, सामुहिक मानस एवं भावराशि में उद्वेलन उत्पन्न करता है। वह बिंब, प्रतीक, संकेत, ध्वनि आदि के द्वारा प्रकाशित होता है। मिथक आदि मानव जाती की सोच की बनावटों-रूपों से जुड़े होने के कारण मौलिक अभिव्यक्ति एवं भावनाओं के संचित रूपाकार है। "[12अ]

वर्तमान का अर्थ आधुनिकता से लिया जाये तो जादा फरक नहीं पड़ेगा। बिंब, प्रतीक या संकेत पुराणों से लेकर आधुनिकता में ढ़ाल दिये जाते हैं। आधुनिक मनुष्य की जटिल समस्या मानसिक अतः प्रवृत्ति तक पहुँचने के लिये पुराण के अनुभवों द्वारा नये आयाम जोड़कर रचनाकार रचना प्रस्तुत करता है। वैसे तो मिथक मानवजाती का सामुहिक स्वप्न एवं सामुहिक अनुभव है। मानव चेतना मिथकीय चेतना से ही विकसित होकर यथार्थवादिता में परिवर्तित होती है। मिथक में आस्था तथा विश्वास का प्राबल्य रहता है। आस्था ही मिथक को यथार्थ तथा नूतन बना देती है। वैसे मिथक में विचार तत्व का आभाव नहीं।

इसप्रकार मिथक नाटकों में आधुनिकता तथा आधुनिकता में मिथक नाटक अक्सर पाये

जाते हैं। हमे अन्य लेखकों से ज्यादा सारोकार नहीं, परंतु डॉ. लाल के मिथक नाटकों के बारे में अवश्य गहराईतक जानकारी हासिल करनी चाहिये। डॉ. लाल ने बहुत साहित्य सेवा की है। फिर भी डॉ. लाल का नाम मिथक के साथ ज्यादा नजदिकी रिश्ते से लिया जाता है। उन्होंने अपने जीवन काल में सात मिथक नाटक लिखे जो इसप्रकार हैं - सूर्यमुख, यक्षप्रश्न, उत्तरयुद्ध, नरसिंह कथा, कलंकी, मिस्टर अभिमन्यु तथा एक सत्य हरिश्चंद्र। इनमें उन्होंने पुराना मिथक आधुनिकता में ढालकर समाज को साहित्य के अध्येताओं को नये आयाम खोलकर रखे हैं। उनके बारे में जितना लिखा जाय कम ही है। उन्होंने सूर्यमुख में सौतेली माँ तथा पुत्र के प्रेम संबंध के बारे में लिखा है। यक्षप्रश्न तथा उत्तरयुद्ध महाभारत के पांडवों के वनवास काल की घटित घटनाओंपर लिखा है। नरसिंह कथा में एकाधिकारी राजा अत्याचारी से भी बत्तर होता है यह बताया है। कलंकी एक प्रेतात्मा की आलसी प्रजापर अंकुश दिखाया है। मिस्टर अभिमन्यु में राजनैतिक गिरावट, भ्रष्टाचार का चरित्रांकन किया है तो आखिर में एक सत्य हरिश्चंद्र में पीड़ित शोषित निम्नवर्ग की समस्या को उभारा हे। उन्होंने सभी नाटकों में समाज की समस्या, राजनीतिक समस्या, आर्थिक समस्या, धार्मिक समस्या तथा यौनसंबंध आदि की चर्चा की है। मिथकीय आशयों का प्रयोग करके वैयक्तिक स्वार्थ या शुद्ध प्रेम, उद्घाटित किया है। मानवीय जीवन संघर्षों से संकटों से आपूरित है उससे सामना करने के लिये या उससे निपटने के लिये अक्षय शक्ति की आवश्यकता रहती है। वह शक्ति जीवन स्त्रोतों से भी प्राप्त की जा सकती है इसका उदाहरण डॉ. लाल ने अपने नाटकों के माध्यम से प्रस्तुत किया हे। व्यक्ति सामूहिक होने के कारण सामूहिक चेतना से भी परिचित होता है। जातीय-सामूहिक संकट के समय व्यक्ति को गहनतम चेतना को संगणित रखना पडता है।

डॉ.लाल सजग नाटककार है। यद्यपि उनके मिथक नाटक इतिहास या पुराण बोधसे सम्पृक्त है तथापि उनके नाटकों में आधुनिकता प्रचुर मात्रा में प्रतिबिंबित होती है। किंबहुना उनके मिथक नाटकों का एक प्रमुख स्वर आधुनिकता ही है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टिसे डॉ. लाल के मिथक नाटकों में प्रतिबिंबित आधुनिकता को निम्नलिखित शीर्षकों में बाँटा जा सकता है। -

1) परिवर्तित सामाजिक मूल्य,

2) राजनीतिक कुटिलता का पर्दाफाश,

3) धार्मिक विश्वास के प्रति नयी दृष्टि,

4) आर्थिक शोषण के प्रति असंतोष,

5) नयी नैतिकता के नये प्रतिमान,

तथा

निष्कर्ष

विभाग : 2

डॉ. लाल के मिथक नाटकों में प्रतिबिंबित आधुनिकता :

---

1) परिवर्तित सामाजिक मूल्य :

साहित्य सृजन के क्षेत्र में आजतक बहुत से विद्वानों ने अपना उच्चतम योगदान दिया है। साहित्य लेखन - वह भी मौलिक - जिसका अध्येताओं को अच्छा पथप्रदर्शन हो - मामूली बात नहीं है। वैसे कोई भी व्यक्ति कुछ भी लिख सकता है, परंतु ऐसे लेखक के जरिये रचनाकार कहलवाना सारासार मूर्खता है। रचनाकार तो जन्मसे ही प्रतिभासम्पन्न होते हैं। उनकी रचनाएँ मौलिक सिद्ध होती है। ऐसे रचनाकारों में एक नाम डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल का है जो साहित्य में जोडे है। उन्होंने अपने जीवनकाल में बहुतसारा लेखन कार्य किया है जो हमने पिछे देखा हे। अब हमें केवल उनके मिथक नाटकों में प्रतिबिंबित आधुनिकता को देखना है।

सामाजिक नाटकों में बहुत से बातों का उल्लेख मिलता है परंतु डॉ. लाल ने उनमें आधुनिकता को उभारकर सामाजिक मूल्य किस प्रकार परिवर्तित हुए है यह वर्णित किया है। जैसे वर्णाश्रम व्यवस्था में परिवर्तन, सामंत वर्ग का प्राबल्य, आश्रम व्यवस्था का विघटन, यौनसमस्या का निराकरण, अनमेल विवाह आदि कई विषय।

सामंत वर्ग की प्रबलता :

डॉ. लाल ने अपने मिथक नाटकोंद्वारा समाज में सामंत की पूँजिपती वर्ग का प्राबल्य किस प्रकार रहा है और यह तो केवल पौराणिक काल की बात नहीं, आधुनिक काल में भी वही सिलसिला चल रहा यह वर्णित किया है। उनके नाटक कलंकी तथा एक सत्य हरिश्चंद्र में इसका चित्रण उन्होंने किया है।

' कलंकी ' नाटक तो तंत्रकालित नाटक है। इसमें जो प्रतिनायक वर्णित है अकुलक्षेम

वह तो साक्षात प्रेतात्मा है जीते-जी वह जो बाते अपूर्ण छोडकर चला गया था वह प्रेतात्मा के रूप में आकर पूरी करता है। इस नाटक का समाज-समाज के लोग आलस्थ से भरपूर, अनाडी, अंध:विश्वासू तथा परंपराग्रस्त है। नाटक का नायक हेरूप उन्हें ऐसे परिवेश से जगाकर उनको उनका अधिकार दिलाना चाहता है, परंतु हारकर, थककर समाप्त हो जाता है। उसीके पिता का प्रेतात्मा उसे देहांत शासन करता है, क्योंकि वह पिता का सामंतवाद अत्याचार नहीं सह सकता। प्रजापर-समाज के व्यक्तियों पर हो रहे अन्याय उससे देखे नहीं जाते। कृषक स्त्री-पुरूष रूढ़िग्रस्त तथा धर्मपर अंध:विश्वास रखने वाले हैं। उन्हें अकुलक्षेम यह कहकर कि, कलंकी अवतार उन लोगों का उद्धार करेगा, आशा दिलाता है। वे लोग पूर्ण रूपसे अवधूतपर-अकुलक्षेमपर- निर्भर है। उन्हें निजी विचार, बुद्धि, व्यक्ति-स्वातंत्र्य आदि बातों का कोई ज्ञान नहीं। अवधूत का प्राबल्य केवल समाज के लोगों से उठाया गया फायदा है।

समाज का संबंध व्यक्ति से तथा समूह से होता है। कलंकी नगरवासी लोकजगत के लोग है। इनका संबंध व्यक्ति-व्यक्ति से न होकर केवल धरती से है। यह पिछडा हुआ समाज है। समाज के लोग वर्तमान का सामना करना नहीं जानते, न हि उन्हें उसकी जरूरत महसूस होती है। इनका संबंध भी भय, प्रीति, दु:ख-सुख, पाप-पुण्य के आदिम मूल्योंसे है, उससे उनकी भावनाएँ जुडी हुई है। ऐसे व्यक्तियों को ऐसे समाज को सुधरना या उनमें परिवर्तन लाना कदापि संभव नहीं। उनको अपने जीवनमूल्यों की कदर नहीं है। उन्हें अस्तित्वबोध की कल्पना तक छूती नहीं उनका जिंदा रहना ही जीवन' है। ऐसे व्यक्तियों में अस्तिवबोध का स्वप्न जगाकर या उनको उनके जीवन का अर्थबताकर उन्हें नागरिक बनाना केवल असंभव है-और इन्ही सारी बातों का फायदा उठाता है अवधूत। उसे एकाधिकार चाहिये। वह उन लोगोंको कहता है -

" मैं तुम्ही सब में से जन्मा हूँ, तब भी और मृत्यू के बाद भी। मैं तुम सब की इच्छा हूँ। "[13]

अवधूत को समाज के लोगोंके इच्छानुसार उनपर धाक जमाना या उनका नेतृत्व करना स्वीकार करना पडा। समाज के लोगों के गैरजिम्मेदारी ने अवधूत के सामंतीवाद को प्रोत्साहन दिया। सामंत-पूरपति तो अपने अधिकारों के तले रौंद्रकर समाज को त्राही भगवान कर देते हैं, परंतु यहा स्थिति कुछ और है, लोगों की इच्छानुरूप सामंत को अपना अधिकार जमाने का अपना प्राबल्य सिद्ध करने का अवसर मिला।

उनका नाटक ' एक साथ हरिश्चंद्र ' में भी यही बातों का सामंती वर्ग-पूंजिपति वर्ग का प्राबल्य दिखाया है। गांव का मुखिया देवधर नीच जाती के प्रति अन्याय करके अपना धाक जमाये

रखने का प्रयास करता है। उनका नेता लोका अपने बीरादरीवालों को उनके अधिकार क्या है, तथा उसे किस प्रकार बर्ताव करना चाहिये यह समझा देता है। परंतु यह बात देवधर को मालूम पड़ती है। इस नाटक में जाति भेद का स्वर उभरा है। छु-अछुत को माननेवाली जनता का प्रतिनिधित्व करता है देवधर अछूत लोग चाहे एडिया रगड़कर मरे या भूख से मरे उनकी सहायता करना सामन्तों के खिलाफ है। अनपढ़, गँवार लोगों को दबोचना तथा अपना वर्चस्व स्थापित करना सामंती वर्ग की खासियत थी। बिकना, सच बोलना, इमानदारी केवल श्रमिकवर्ग के लिये चुने गए शब्द थे। सामंतवर्ग पूँजीपति केवल सुख का उपभोग करके श्रमिक या हीन लोगों के प्रति न्याय करेंगे। समाज के कुछ लोग जो रूढ़िप्रिय है, परंपराग्रस्त है, धर्मभीरू है, सामंतों के विरूद्ध बंड पुकारने में सहायता नहीं करते। लोका जैसा एखाद नेता ऐसी स्थिति को समझकर उन में परिवर्तन लाकर नया आदर्श प्रस्थापित करता है। लोगों को उनके मानवीय अधिकारों के प्रति सजग करके उन्हें विद्रोह करने में सहाय्यता करता है। शोषित समाज भी सामंतीवर्ग को उसके चाल-चलन को समझ गया है। सामंतों का बढ़ता प्राबल्य उन्हें कबूल नहीं। अब वे विद्रोहपर उतर आयें हैं।

" हरिश्चंद्र की पुराणकथा का दो स्तरों पर उपयोग करते हुए डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल ने आधुनिक समाज व्यवस्था में ऊँच-नीच, जाँत-पाँत के आधारपर पिछडे लोगों का सवर्णो तथा सत्ताधारी निहित स्वार्थो, शक्तियोंद्वारा शोषण का चित्रण लोकनाट्य शैली में किया है। हरिजनो तथा पिछडे वर्गों में धर्म-भय जगाकर या राजनीतिक आंतक और हिंसा से उन्हें शोषित करने का प्रयत्न नाटकीय संघर्ष को दोहरी भंगिमा प्रदान करता है। "[14]

गौतमजी ने उचित वर्णन करके डॉ. लाल किस प्रकार पुराणकाल से आधुनिक काल तक सजग रहें हैं तथा पुराणकाल को आधुनिक काल में ढालकर नयापन प्रदान किया है यह बात बतायी है।

सामंतों को समाज में कुछ भी करने का हक है, परंतु नीच-जातिवाले कुछ नहीं कर सकते। इस परंपरा को तोड़कर लोका सत्यनारायण कथा के जरिए सत्य हरिश्चंद्र की कथा को उभारता है। उसमें लोका समाज का सही चित्र उभारकर देवधर को बता देता है कि अब कोई सत्य की परीक्षा नहीं देगा। यहाँपर सभी एक सूत्र में बाँधे हुए है, हरिश्चंद्र का स्वर्ग इंद्र के स्वर्ग के बराबर नहीं तो भूलोक में ही लोका को स्वर्ग बताना है जो सभी सही अर्थों में अपना जीवन बितायेंगे। इस प्रकार लोका सामंतवाद का प्राबल्य मिटा देता है।

यौनसमस्या तथा अनमेल विवाह :

डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल ने अपने बहुत नाटकों में यौनसमस्या तथा अनमेल विवाह का स्वर उभारा है। उनमें से उनका मिथक नाटक है ' सूर्यमुख ' - जो महाभारत के आधार पर रचित है। श्रीकृष्ण की आखरी पत्नी वेनुरति इस अनमेल विवाह को नकारती है। समाज उसके विरूद्ध बहुत बवंडर उठाता है। उसे सर्पिन, कुल का नाश करनेवाली तथा कई नामों से पुकारती है। यह अनमेल विवाह जब रचा गया तब जनता-समाज कुछ बोलना नहीं चाहता था, परंतु जब वेनुरती इस रिश्ते को नकारती है तो क्यों ? इसका उत्तर है, रूढ़ी, परंपरा समाज में घटित अन्याय। उस समय से लेकर आजतक यही आत्याचार स्त्रियों पर होता आया परंतु किसीने उफ् तक नहीं किया। नारी जागरण की भावना, स्त्रियों में प्रतीफलित नहीं हुयी थी। नारी शोषण हो रहा था। यौवनावस्था स्त्रियों से ज्यादा पुरूषोंपर ज्यादा फबति है ऐसा विचार समाज में फैला था। स्त्री तो केवल उपभोग्य वस्तु है, उसे विचार स्वातंत्र्य, मूलभूत अधिकार देने की आवश्यकता समाज को महसूस नहीं होती थी।

वेनुरती तथा प्रद्युम्न-जो श्रीकृष्ण तथा रूक्मिणी का पुत्र है - एक दुसरे को बेहद चाहते थे। उनका प्यार युगयुगान्तर का प्यार था। उनका प्यार समाज की मर्यादाओं रूढ़ि, परंपरा तथा रिश्ता-नाता किसी का भी विचार नहीं करता। यह तो झरने की तरह फूट निकला है। प्रद्युम्न वेनुरती को समाज का कोई भी बंधन स्वीकृत नहीं है। वेनुरती अपनी सौ-सास से कहती है - " प्रद्युम्न मेरे लिये एक अनिवार्य पुरूष था, केवल पुरूष, जैसे मैं उसके लिए केवल एक स्त्री थी। "[15] वेनुरती अपने प्रेयतम को तो पती के रूप में स्वीकार करती है, जो उसका समाज की दृष्टि में पुत्र-सौतेला पुत्र है। प्रद्युम्न तथा वेनुरती का सहज प्रेम सामाजिक बंधनों से कई उपरी सतह पर है। नाटक में दर्शित काल-समुद्र समाज निर्मित तूफान ही है। उस तूफान का सामना करने के लिए द्वारपाल तथा वेनुरती प्रद्युम्न को प्रोत्साहित करते हैं। दुर्भाग्यवश वह अपने प्रेम में जी कर भी समाप्त होता है।

डॉ. लाल यह कहना चाहते हैं कि आज का हर युवक अपने आपको प्रद्युम्न समझकर झगडता नहीं केवल प्रेम में जीना चाहता है। परंपरा के प्रति विद्रोह करनेवाले - आधुनिकता की ओर उन्मुख होने वाले प्रद्युम्न-वेनुरती को सामाजिक समस्याओं का कोई बंधन स्वीकृत नहीं। डॉ. लाल ने अपने कुछ नाटकों द्वारा इस प्रकार सामाजिक मूल्य गिरते हैं स्वैर अधुनिकता की ओर उन्मुख होते हैं यह दर्शाया है। सामाजिक मूल्यों का परिवर्तन, रूढ़ि-परंपराओं का परिवर्तन ही वास्तविक आधुनिकता है यह बात स्पष्ट हो जाती है। इसप्रकार सामाजिक अन्य नाटकों में भी स्त्री-पुरूष संबंध, यौनाचार तथा वर्ग-चेतना को स्थान दिया गया है। बदलते जीवनमूल्यों के साथ प्रेम का स्वरूप तथा परिभाषा भी डॉ. लाल ने बदल दी है। आधुनिकता को उभारने के लिए, स्वीकारने के लिए

जीवनमूल्यों को बदलना जरूरी है।

रमेश गौतमजी का वक्तव्य यहाँ पर दृष्टव्य है - " सामाजिक मर्यादा की तूलना में मानवीय अनुभूतियों एवं भावनाओं को ही उन्होंने सर्वोपरि माना और उसे मान्यताप्रदान की। वेनुरती और प्रद्युम्न का स्वाभाविक आकर्षण उन्हें एकसूत्रता में आबद्ध करता है। सौतेली माँ-पुत्र का कृत्रिम संबंद्ध था। सामाजिक मर्यादा उन्हें अलग नहीं कर पाती। इस प्रेम के लिये उन्हें समाज की प्रताड़ता, घृणा व्यंग्य सहने पड़े और प्रद्युम्न तो दण्डीत होकर नागकुण्ड की पहाड़ियों में निर्वासित रहा। "[16]

समाज के मर्यादाओं का उल्लंघन करके प्रद्युम्न तथा वेनुरती आधुनिकता के नये आयाम खोलते हैं। पौराणिक संदर्भ से वर्तमान जीवन के दरम्यान जो आधुनिकता का रूप नाटककार ने प्रस्तुत किया है, वह केवल परंपरा को तोड़ना नहीं, बल्कि उसके साथ रचनाकार ने आधुनिक मनुष्य की त्रासदी को चित्रित करने का प्रयास किया है।

2) राजनीतिक कुटिलता का पर्दाफाश :

डॉ. लाल ने अपने मिथक नाटकों की माध्यम से भ्रष्टाचारित राजनीति का चरित्र उभारा है। इसमें उनका पहला नाटक है ' यक्ष प्रश्न ' तथा ' उत्तरयुद्ध '। यक्षप्रश्न का उत्तर केवल युद्ध है। यक्षप्रश्न में जो प्रश्न उपस्थित किए हैं वे बौद्धिकतावाद पर आधारित हैं। परंतु युधिष्ठिर अपने भाईयों को इतना ही नहीं अपने पत्नि को - यह पत्नि केवल उसकी पत्नि नहीं, वरन् पाँचो भाईयों की पत्नि - दांवपर लगाता है। यह दाव राज्य को हासिल करने के लिये ही तो लगाया गया था। यह कुटिल राजनीति का द्योतन नहीं तो और क्या है ? महाभारत काल के ये दो लघुनाट्य बहुचर्चित हुए हैं। उत्तरयुद्ध में पाँचों पांड़व आपसी संघर्ष में व्यस्त दर्शाये गए हैं। हरएक को अपना अस्तित्व प्रिय है। अपने अहं तथा अस्तित्व की रक्षा के लिए वे दुर्योधन तथा दुःशासन जैसे दुराचारियों के हाथ में अपनी पत्नी को सौंप देते हैं। राजनीतिक कुटिलता पराकोटी पर जा पहुँची है। द्रौपदी चाहती है उसके लिए उसके पति - जो महापराक्रमी हैं - युद्ध करें। वह बार-बार उन्हें उकसाती रहती है, परंतु सब बेकार हो जाता है। अंत में दुराचारी उसे ले ही जाते हैं और पाँचो भाई आपसी संघर्ष के टकराव में बहकर उसे खो देने की दशा में हैं। डॉ. लाल ने द्रौपदी को शक्ति मानकर आधुनिक समाज में ऐसी शक्ति दुराचारियों के हाथ में सौंप कर अच्छे व्यक्ति आपसी संघर्ष में खो गये हैं ऐसा चरित्रांकन

किया है। आधुनिक नारी भी भारी संकट काल में है। उसे केवल उपभोग्य वस्तु मानकर समाजकंटक उसका उपभोग लेना चाहते हैं। ऐसी स्थिति को परिवर्तित करके नये मूल्यों की प्रतिष्ठापना की आवश्यकता रचनाकारों को महसूस होने लगी है। डॉ. लाल ने आधुनिकता को जीवन की यथार्थ से जोड़कर और स्पष्ट रूप से उभारी है। उनके नाटकों में जीवन की यथार्थवादी चेतना के प्रति जागरूकता है यही आधुनिकता का मूलतत्व है।

उनका अन्य नाटक ' नरसिंह कथा ' पुरानकाल पर आधारित है। पुराण का हिरण्यकशिपु और आज के आधुनिक हिरण्यकशिपु में कोई परीवर्तन नहीं है। पुराण का हिरण्यकशीपु एकाधिकार चाहता था, आधुनिक राजनीतिज्ञ भी वही चाहता है। राज्यलिप्सा का रूप भयानक होता है यह बात स्पष्ट होती है। हिरण्यकश्यीपू अपने राजनीतिक विरोधियों को कारागृह में बंद करके अपना विरोध ही समाप्त करने का प्रयास करता है। जनता तो दुर्गणों से भरी हुअी है। कर्म के बिना जीवित रहने का अट्टाहास, पलायनवादिता, विचारहीनता तथा आलस्य आदी दुर्गुणों से युक्त जनता हिरण्यकश्यीपू जैसे राजा को अपना नेता मानती है। राजा को इश्वर माननेवाली ऐसी प्रजा को क्या किया जाये ? हिरण्यकशीपू का पुत्र ही प्रल्हाद अपने पिता के प्रति विद्रोह कर बैठा है। डॉ. लाल ने पुराण को प्रल्हाद की अपेक्षा आधुनिक प्रल्हाद के आयु में बड़ा, विचार में बड़ा, तथा कार्य में भी बड़ा प्रस्तुत किया है। वह हुताशत को बार-बार भड़काता रहता है, प्रेरित करना चाहता है। अंत में वह यश भी पा लेता है, की उताशत द्वारा हिरण्यकशीपू का नाश। आधुनिकता की धरातलपर सत्पवृत्तीद्वारा कुप्रवृत्ती का नाश। प्रल्हाद जनता को - सजग करके उनमें नयी चेतना पिरोकर उन्हें दु:शासन के विरोध में खड़ा करता है। लोगों की राजा के प्रति जो आस्था है, उसे नष्ट करने का प्रयास प्रल्हाद करता है। जैसे -

" मेरा विनम्र प्रणाम स्वीकार कीजिए और अपने राजा को यह संदेश दीजिए - जो प्रजा गणतंत्र की है, उसके संस्कार लोकतंत्र के हैं, वह निरंकुश शासन में नहीं रह सकता। "[17]

अब प्रजा जागरूक हो चुकी है। उसे सही-गलत, अच्छा-बुरा सभी पहलु समझ में आने लगे है। राजा की निरंकुश सत्ता अब जनता सह नहीं सकती। गणतंत्र का जमाना है और लोग अपने अधिकारों के प्रति सजग हो चुके हैं। अब उन्हें कोई बहला नही सकता। विश्वासघात नहीं कर सकता। हिरण्यकश्यीपू का पुत्र प्रल्हाद ही अपने पिता की कुटिल राजनीति पहचानकर उसका

पर्दाफ़ाश करता है। सभी नागरिक तथा अपने मित्र-परिवार को सजग करके उनके खिलाप भड़काता है। हिरण्यकश्यीपू के एकाधिकार को नष्ट करना चाहता है। गणतंत्र लाकर सभी को अपना-अपना अधिकार प्रदान करना चाहता है।

" अब यह सिद्ध हो चुका है कि, आप के राजा और आप सत्तालोलुप है। सत्तालोलुपता को हमेशा सिद्धांतों की ओट में छिपाने की चेष्टा की है। "[18]

राजा, लोगों को दिशाहीन करने के लिए कभी धर्म की ओट लेता है तो कभी सिद्धांतो की। परंतु यह बात प्रल्हाद अच्छी तरह पहचान गया है, और अन्य लोगों को भी सजग करने का प्रयास करता है। सभी को सजग करके एकाधिकार नष्ट करके ही दम लेता है। ऐसा करते समय उसे अपने पिता की - कुप्रवृति का - अंत करना पड़ता है।

डॉ. लाल का नाटक ' कलंकी ' भी राजनैतिकता की सबक पाता है। यह राजनैतिकता पुरपति की है, जो प्रेतात्मा बनकर भी अपना कार्य पुरा करता है। इसके लिए धर्म की आड़ लेनी पड़ी। परंतु परंपराग्रस्त आलसी लोगों को इस बात का पता नहीं चलता। ' नरसिंह कथा ' जैसा इस नाटक में भी पिता-पुत्र विरोधी दर्शाये गये हैं। फर्क इतना है कि, नरसिंह कथा का पिता - हिरण्यकश्यीपू - जिंदा व्यक्ति था - परंतु ' कलंकी ' का पिता - आकुलक्षेम - प्रेतात्मा के रूप में दर्शाया गया है। ' कलंकी ' में जो धार्मिक कर्मकंड की रचना की गयी है वह राजनीति के आधारपर रचा गया कर्मकांड है। कुशासन-व्यवस्था का प्रतीक ही नाटक में उभारा गया है। आधुनिक शासक भी प्रेतात्मा की तरह न मरनेवाला है, उन्हें समाप्त करना असंभव-सा हो गया है। डॉ. लाल ने अपने इस नाटकद्वारा आधुनिक राजसत्ता का सही चित्रांकन किया है। आज राजनीति क्षेत्र में हरशासक निरंकुश हैं।

" मध्ययुग में जो तंत्र-साधना के नाम पर शवसाधना थी, वहीं आज प्रजातंत्र के नाम पर मतगणना नहीं है। क्यों ? शवसाधना कब पुरी मानी जाती है ? जब औधे पढ़े हुए शव का मुख, उसकी पीठ पर लदे हुए साधक की ओर घूम जाएगा, और जब वह जीवित मनुष्य की भाँति उससे बात करेगा। क्या यह आज के राजनीतिक परिवेश में पड़े हुए मनुष्य के लिए सच नहीं है ? '[19]

आज के राजनीति का चित्र उभारने के लिये डॉ. लाल ने शवसाधना की कल्पना को उभारा है। आधुनिक राजनीतिज्ञ सामान्य जनता को शव से जादा महत्व देने को तैयार नहीं। इसप्रकार

डॉ. लाल ने आधुनिकता के जरीए राजनीति का - कुटिल राजनीति का पर्दाफाश करने के लिए मिथक द्वारा काल्पनिक नाटक की रचना करके उदाहरण प्रस्तुत किए हैं।

' मिस्टर अभिमन्यु ' डॉ. लाल की अप्रतिम रचना है। पुराणाभासित नाम है, नाटक के पात्र आधुनिक है। परिवेश भी आधुनिक है, केवल चक्रव्युह जो पुराण के अभिमन्यु का था, वही आज के मनुष्य का है। हरएक का अपना एक चक्रव्यूह होता है। नाटक का नायक राजन एक कलक्टर है, उसे पिताद्वारा यह नौकरी मिल जाती है। परंतु राजन का व्यक्तित्व इमानदारी के साथ केवल पहले-दूसरे अंक में उभारा है। राजन, केजरिलाल तथा दत्त जैसे जबरदस्त राजनीतिज्ञों के साथ जूझता है। वह तो अपने पद से इस्तीफा भी देना चाहता है, परंतु पिता तथा पत्नि द्वारा दिये गए राय से चंचल होकर अपने उद्दीष्ट से गिर जाता है। महाभारत का अभिमन्यु किसी की राय लिये बिना चक्रव्युह में प्रवेश करता है और बाहर आने का तरीका मालूम नहीं फिर भी कर्ण, द्रोणाचार्य, भीष्म जैसे रथी-महारथीयों से टक्कर लेकर शहीद हो जाता है। परंतु डॉ. लाल ने अभिमन्यु के शहादत की हत्या करके आधुनिक राजनीति का पर्दाफाश किया है। नौकरी के लिए राजनीति को मन चाहा तोड़ा मरोड़ा है। राजन ने। जैसे -

" राजन : हाँ तूने अन्याय किये, अन्याय को छिपाने के लिए। अपराधी को दंड दिये, अपराध पर पर्दा डालने के लिये। खुदकुशी की, खुद को जिंदा रखने के लिए।

राजन : तब तेरी आस्था थी, स्वतंत्रता के बाद आझादी की लड़ाई शुरू होती है

राजन : वह अब तक हैं।

राजन : मेरे जन्म के साथ तुझमें अब एक नया विश्वास पैदा हुआ है। आज समाज में केवल दो ही आयड़िया है, राजनीति और नौकरी - । तभी हर राजनीति नौकरी हो जाती है, और हर नौकरी राजनीति। "[20]

राजनीति के तह में जाकर देखे तो वहाँ केवल दलदल कीचड़ ही मिलेगा। राजन की आत्मा राजन को बार-बार झिंझोड़ति रहती है, परंतु सब बेकार जाता है। राजन को राजनीति के भ्रष्टाचार से दूर होना है पर वह नहीं हो सकता। राजन की आत्मा की हत्या नाटक का महत्वपूर्ण भाव है। व्यक्ति आत्मा को मारकर निर्लज्जता से जीता है, यही तो आज के आधुनिक व्यक्ति की

त्रासदी है। राजनीति का पर्दाफाश तो है ही परंतु वास्तव में मनुष्य के हीनता का भी द्योतक है। नाटक में गयादत्त राजनैतिक प्रवक्ता है उसका विरोध राजन की आत्मा करती है। केजरीवाल उसको साथ देता है। तत्कालीन राजनीति में राजन की आत्मा की तरह एखाद व्यक्ति ही विद्रोह करता है, परंतु अन्य बहुत आवाजों की दबाव पर वह आवाज सुनाई नहीं दि जाती है। आत्मा की मृत्यु ही व्यक्ति की मृत्यु है।

" राजन का चरित्र अंतर्द्वंद्वों से उभरा है। ' अभिमन्यु ' की हार में आधुनिक व्यक्ति की त्रासदी और विडम्बना की तत्सम अभिव्यक्ति है, जो अपने सुख भोग के लिए दूसरे के शोषण के लिए एक-दूसरे के ' चक्रव्यूह ' बनाते हैं। गयादत्त भ्रष्टसुख भोग की राजनीति का प्रतीक है। "[21]

डॉ. लाल का नाटक ' एक साथ हरिश्चंद्र भी कुटिल राजनीति का पर्दाफाश करनेवाला नाटक है। गाँव का मुखियाँ देवधर अपनी सत्ता के लिए लोगों को दबोच कर रखना चाहता है। उन्हें उनके जातीयवाद पर टिका कर हीनता को बर्ताव करता रहता है। नाटक का नायक लौका सत्य को पहचानता है। वह भी नीच जाति का है, परंतु विद्रोह करके आधुनिकता प्रस्थापित करता है। रूढ़ि-परंपरा तो छुअछुत माननेवाली है, उसके प्रति अपना विरोध प्रकट करके बंड़ उभारता है। लोगों को अपने अधिकारों के प्रति सजग रखता है। डॉ. लाल ने एक अप्रतिम नाटक के अंदर नौटंकी खेली है। जो राजनीति पर आधारित है।

' हरिश्चंद्र का नाटक खेलते हुए लौका और उसके साथियों को जिस जीवन-दर्शन की प्राप्ति होती है वह वर्तमान राजनीतिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है। इस नवीन दृष्टि को प्राप्त कर वे सत्ताधारी राजनीतिज्ञों की ' श्राप ' और ' भय ' की शक्ति से मुक्त होकर अपने अनुभव से जीवन जीने की बात करते हैं। वस्तुतः अपने पात्रों के माध्यम से नाटककार ने तत्कालिन राजनीतिज्ञ जनजागृति को सार्थक अभिव्यक्ति प्रदान की है। "[22]

सत्ताधारी देवधर की राजनीति को लौका समूल नष्ट करना चाहता है। अनाडी लोग देवधर की राजनीति को न ही पहचान पाते। वे रूढ़िग्रस्त - परंपरा ग्रस्त है, उन्होंने आज तक जो भोगा है, उसे और भी भोगने को तैय्यार है। परंतु युवा पिढ़ी के युवक - लौका और उसके साथी - अब यह भोगने को तैय्यार नहीं। लौका का कहना है कि पुराण के हरिश्चंद्र ने तो सत्य की परीक्षा

दे देकर स्वर्ग प्राप्त किया। परंतु हमने तो सत्य जिया है, हमारे पुरखों ने जो सत्य जीया है वह और जीने की आवश्यकता नहीं। उन्होंने तो सत्य जीया है, जीवन के प्रति जो भर्त्सना पायी है उसका कोई विकल्प नहीं। अब और नरक जैसा जीवन बीताने की तैय्यारी नहीं है। लौका देवधर के मुखौटे का पर्दाफाश करता है। अपने आपको इंद्र कहलाने वाले देवधर को भी सत्य परीक्षा देने के लिए मजबूर करता है। आधुनिकता की झलक इसमें इस प्रकार पायी गयी है कि - इंद्र के उकसाने पर ही विश्वामित्र हरिश्चंद्र के सत्य की परीक्षा देने को जबरदस्ती करता है। परंतु आज का हरिश्चंद्र लौका ही इंद्र को सत्य की परीक्षा देने के लिए कहता है। पूरे पुराण कथा को पलट दिया है। और आधुनिकता दर्शनीय है, विश्वामित्र के चरित्र की। विश्वामित्र का चरित्र पेश करनेवाला पात्र जीतन भी अपने राजा यने देवधर के प्रति विरोधी बनकर प्रस्तुत हुआ है। वह कहता है कि, जैसे जैसे विश्वामित्र के चरित्र में बैठ़ता जा रहा हूँ अपने आप के सामने हो रहा हूँ। मतलब अपने आप को पहचानने लगा हूँ। सत्य क्या है ? , इसका पताजीतन को चलता है। वह सत्य के पक्ष में - लौका के पक्ष में चला जाता है और देवधर के विरूद्ध षड़यंत्र रचने में लौका की सहाय्यता करता है। देवधर के अत्याचार को पहचानकर उसे रोकने की चेष्टा करता है। लौका के साथ कहता है कि, हरिश्चंद्र का सिंहासन भी इंद्र के सिंहासन के बराबर होगा। इस धरतीपर ही स्वर्ग बनाकर सभी को समानता प्राप्त कराना ही उनका उद्दिष्ट है। वह नाटक के अंततक लौका का साथ नहीं छोड़ता। आधुनिकता की कड़ी को यहाँ पर जोड़कर राजनीति का पर्दा फाश किया है।

धार्मिक विश्वास के प्रति नयी दृष्टि :

धर्म के नाम पर भारतवासी सबकुछ करने को तैय्यार होते हैं। भारतीय जनता के प्रति लोगों की आस्था अभितक उसी रूप में है जो पुराणकाल में थी। कुछ लोग बुद्धिप्रामाण्यवाद के नामपर धर्म के प्रती अनास्था निर्मिती का कार्य करते हैं, परंतु वे सौफ़ी-सदी खरे नहीं उतरे हैं। ईश्वर कल्पना, अस्तित्ववाद, कर्म सिद्धांत, त्यौंहार, भौतिकजीवन आदि बातों का विचार इसमें किया जा सकता है। भारत संस्कृति प्रधान होने से धर्मभीरू लोग ज्यादा मात्रा में पाये जाते हैं। भारतीय जनता में विश्व-बंधुत्व की भावना सजग है यहाँ विविध धर्म और विविध पंथीय लोग होने से इसे हिंदुस्थान कहते हैं।

अ) ईश्वरकल्पना :

धर्म में सबसे प्रमुख है ईश्वरकल्पना। ईश्वर का अस्तित्व मानना ही आस्तिकवाद है। ईश्वर कोई प्रतिबद्धित रूप नहीं। हरएक की कल्पना में यह ईश्वरीय रूप अलग-अलग हो सकता है। कोई भगवान शंकर के मूर्ति का पूजक है तो कोई श्रीराम का, कोई श्रीकृष्ण के मूर्ति का पूजक है तो कोई माता अम्बा, भगवती आदि का। मूर्ति का पूजक माने श्रद्धा तथा आस्था का स्थान। कोई अपने माता-पिता-गुरू को भी श्रद्धास्थान बनाकर पूजन कर सकता है। मन में श्रद्धाभाव हो तो पत्थर को लगाये गये गंध से भी पूजन हो सकता है। केवल भावना की आवश्यकता रहती है। कभी कोई अपने राजा के प्रति आस्था रखता है तो कोई बड़े भाई के प्रति या कोई अपने प्रेमि के प्रति भी आस्था रखता है।

डॉ.लाल का नाटक ' सूर्यमुख ' में प्रद्युम्न-वेनुरती का प्यार भी परस्पर दोनो के मन में आस्था को भावना जगाता है। नगर का वृद्ध रूक्मिनी को धर्मग्रंथ की बात बताता है - कहता है प्रद्युम्न वेनुरती का गीत धर्मग्रंथ से सुना था।

" रूक्मिनी - धर्म से मेरे पुत्र और वेनुरती का संबंध पुत्र और माँ का था। वृद्ध - जन्मजन्मांतर का संबंध पति और प्रिया का था। प्रद्युम्न कामदेव का अवतार है। वेनुरती वही रती है, कामदेव की प्रिया। "[23]

प्रद्युम्न वेनुरती का रिश्ता जन्मजन्मांतर का है, जो परस्पर आज के युग में भी है। आधुनिक युग में भी ऐसा उदाहरण देखने को मिलेगा। समाज तो दोनो तरफ बोलता है। धर्मग्रंथ में जो लिखा है, कभी वह गलत कहेंगे तो कभी सिरपर उठाएंगे। हमने पिछे देखा ही है कि प्रत्येक युग की आधुनिकता अपनी अलग होती है। परम्परा को तोडना ही आधुनिकता है। महाभारत काल में श्रीकृष्ण ने परम्परा को तोड़कर गोपियोंसे प्रणय क्रिडा की। उसके बाद उन्ही के पुत्र प्रद्युम्न ने भी परम्परा को तोडा और अपने सौतेली माँ से प्यार किया, आधुनिकता प्रस्थापित की। प्रद्युम्न वेनुरती की दृष्टि से ईश्वरीय सत्य था तो वेनुरती प्रद्युम्न की दृष्टि में ईश्वरीय देन थी।

' नरसिंह कथा ' में हिरण्यकशिपु सामान्य जनता की कल्पना में ईश्वरीय रूप पाना चाहता था। अगर उसने एकाधिकार स्थापित करने के बजाय लोगों के मन में विश्वास पैदा किया होता तो शायद यह बात भी फलित होती। परंतु ऐसा नही हो हुआ। फिर भी हिरण्यकशिपु जोर जबरदस्ती

से लोगों के मन में अपने प्रति ईश्वरीय कल्पना करने का प्रयास किया जिसका फल हुआ हिरण्यकशिपु का अन्त। वह अपना उद्दिष्ट साध्य नहीं कर सका। इसके विपरीत प्रल्हाद ने जनसामान्य के मानस में अपने लिये वही स्थान प्राप्त किया जो उसने कल्पना भी नहीं की थी। प्रल्हाद के प्रति लोगों के मन में ईश्वरीय कल्पना प्रस्फुटित हुई।

' कलंकी ' का अकुलक्षेम धर्म के नामपर लोगों को ढगाता था। खुद को ईश्वर सावित करने का प्रयास करता रहा, लोक जागृत अवस्था में उसे प्रश्न पूछते लगे तो लोगों को ही दोषी ठहराकर वह भाग जाता है। वह लोगों के मन में अपने प्रति ईश्वरीय कल्पना साकार नहीं कर सका। वह प्रेतात्मा होने की वजह से मर नहीं सका, नष्ट नहीं हो सका, परंतु निकल गया। वह कहीं और जाकर अपनी साधना करके, कहीं और इसी प्रकार की अंधःश्रद्धा फैलाकर अपने को ईश्वर सिद्ध करने का प्रयास करेगा। उसकी साधना तबतक चलती रहेगी, जबतक वह अपनी आत्मा को मुक्ति नहीं चाहता। जिस दिन उसके आत्मा को मुक्ति मिलेगी वह दिन उसके लिये ईश्वरीय कल्पना साकार होने का है। आधुनिक मानव का बिंब भी डॉ. लाल ने इसी के द्वारा उभारा है।

डॉ. लाल का नाटक ' एक सत्य हरिश्चंद्र ' में सत्यनारायण की कथा बताई है। गांव के उँचे लोगों को सत्यनारायण कथा कराई जा सकती है, परंतु अछूत लोगों को वह अधिकार नहीं। इसलिये लौका - जो अछूत है - वह सत्यनारायण कथा की जगह सत्य हरिश्चंद्र कथा को उसका पूरा रूप बदलकर ही प्रस्तुत करता है। लौका के हरिश्चंद्र कथा में आधुनिकता उभरकर है। पुराण काल के हरिश्चंद्र ने सत्य की परीक्षा दी, परंतु आज का आधुनिक हरिश्चंद्र सत्य जी रहा है। उसे सत्य की परीक्षा देने की आवश्यकता नहीं। और पुराण का हरिश्चंद्र स्वर्ग प्राप्ति के बाद स्वर्ग चला गया, परंतु आज का हरिश्चंद्र भूलोक पर ही स्वर्ग बनाने की चाह रखता है। अगर देवधर जैसे इंद्र भूलोक पर है तो हरिश्चंद्र का स्वर्ग में कोई मतलब नहीं। उसे - हरिश्चंद्र - को जहाँ इंद्र का स्वर्ग है वहीपर रहना मंजूर है।

आ) कर्म सिद्धांत :

कर्म सिद्धांत में काम, क्रोध तथा लोभ पर विजय पाने के लिये मनुष्य को सतत सजग रहना चाहिये यह प्रतिपादित किया है। अहं भावना तथा पार्थिव शरीर का मोह ही इसके आडे आता है। अध्यात्म के अध्ययन से तथा लगन से उपर्युक्त दोष नष्ट हो सकते हैं। परंतु सर्वसामान्य व्यक्ति

को ये बातें आसानी से नहीं प्राप्त हो सकती। इसका विपरीत अर्थ डॉ. लाल ने अपने नाटक ' कलंकी में उभारा है। लोगों को दिशाहीन बनाकर पथभ्रष्ट करके अवधूत उनका आलस्य अंधविश्वास बढ़ाता है। उन्हें आशा दिखाता है कि, कलंकी अवतार उनका उद्धार करेगा जो सारासार गलत है। उनका नाटक ' मिस्टर अभिमन्यु ' में भी राजन को दिशाहीन कराके उसके दृष्टि से पथभ्रष्ट करते हैं। भ्रष्टाचारी राजनीतिज्ञ गयादत्त तथा केजरीवाल जैसे पूँजिपति राजन को अपने कर्म से कार्य से भटकाते हैं। उसे अपना उद्दिष्ट साध्य नहीं करने देते। राजन अपने आत्मा की पुकार सुनकर गडबडी करने लगता है तो गयादत्त तथा केजरीवाल मिलकर उसके - राजन के आत्मा की ही हत्या करते हैं। फिर तो उनका रास्ता साफ हो जाता है। और वे अपने सुविधानुसार राजन के जरिये मनमानी करते हैं। राजन कहता है मैं आप सभी का हूँ। यही उनका उद्दिष्ट था।

डॉ. लाल ने अपने जीवन काल में मिथक नाटक लिखे जिसका मूल आधार है पुराण। रमेश गौतमजी का कथन दृष्टव्य है -

" वस्तुतः डॉ. लाल ने पुराणों से मिथक एवं लोक जीवन में प्रचलित कथाओं को लेकर उनकी प्रतीक शक्ति का उपयोग अपने नाटकों में ' आज ' के अंकन के लिये किया है। और उनके ये मिथकावलाम्बित नाटक अपने वस्तु संदर्भ में पौराणिक परिवेश और धारणाओं को समेटे हुए भी अपना प्रभाव वर्तमान जनजीवन पर छोड़ते हैं। इनकी प्राचीनता नई संवेदना से सम्पृक्त होकर अपना रूप त्याग देती है। "[24]

आधुनिकता का दर्शन डॉ. लाल की खासियत है। उन्होंने अपने मिथक नाटकों में पुराण का सन्दर्भ देकर आधुनिकता को प्रस्तुत किया है। आधुनिकता में धर्म, समाज, अर्थव्यवस्था आदि बातों को ढ़ालकर उन्हें नयापन प्रदान किया है। जो उन्हें साहित्य में उच्चस्थानपर बिठ़ाता है। उन्होंने धार्मिक विश्वास के प्रति भी नया दृष्टिकोण रखकर अपने नाटकों की चर्चा की है जिनका उल्लेख हम उपर्युक्त कर चुके हैं।

आर्थिक शोषण के प्रति असंतोष :

आधुनिक युग में आर्थिक समस्याएँ मुँह फैलाकर बैठी है। भारत की आर्थिक प्रणाली दिन-ब-दिन गिरती बिगड़ती जा रही है। बेरोजगारी, भूखहडताल, कालाबाजार, गरीबी समस्या, अकाल जैसे गहन प्रश्न के उत्तर असंभव से होते जा रहे हैं।

उपर्युक्त बातों में से आर्थिक प्रणाली पर आधारित डॉ. लाल का नाटक ' मिस्टर अभिमन्यु ' है। इसमें राजनीति का चित्र उभारा गया है। परंतु समाज में फैली बेरोजगारी तथा कालाबाजार आदि समस्याओं का चित्रांकन हुआ है। कालाबाजारी केजरीवाल राजन के पिताजी को बहकाकर राजन को वश में करने का प्रयास करता है। यह बात राजन को बिलकुल पसंद नहीं। देखते है -

" विमल : केजरीवाल की पिताजी से जान पहचान है।

राजन : तो वह टैक्स केस में वकालात करने गये हैं। अगर कुछ ऐसा वैसा किया तो .....

विमल : वह कह रहे थे .....

राजन : उन जैसे बीसीयों वकील उसके यहाँ नौकरी करते हैं .... मुझे डर है, पिताजी कुछ कर न बैठे .... श्री केजरीवाल के कोठीपर फोन मिलाना .... " 25

राजन जान जाता है कि पिताजी केजरीवाल से मिलकर कुछ अनहोनी बाते कर बैठेंगे। राजन को ऐसे माहोल से नफरत है। वह केजरीवाल के गोदाम को सील करता है, परंतु उपरी आदेश आनेपर निराश होकर अपने आपसे झटपटाता है। उसकी यह झटपटाहट आर्थिक शोषण, कालाबाजारी आदि से हैं। वह ऐसी व्यवस्था को बिलकूल पसंद नहीं करता, परंतु परिस्थिती उसे ऐसी व्यवस्था के बाहर नहीं निकलने देती। वह मुक्ति चाहता है, परंतु उसके आत्मा को ही मौत आती है। आर्थिक परिप्रेक्ष्य बिगड़ने के कारण पूरे समाज का संतुलन ही बिगड़ जाता है। यहा समस्या केवल समाज की समस्या नहीं वरन् व्यक्ति की समस्या भी इसमें शामिल है। व्यक्ति की समस्याओं का पर्दाफाश भी डॉ. लाल ने यहाँपर किया है जो उचित है।

उनका नाटक ' एक सत्य हरिश्चंद्र ' में भी यही व्यक्ति की समस्या को उभारा है। गरीबी की समस्या है। गरीब तथा अछूत लोगों को चूसनेवाले देवधर जैसे मुखिया का पर्दाफाश करता है लौका। लोगों को दबोचना या उनके अधिकारोंपर अतिक्रमण करना लौका को बिल्कुल पसंद नही। वह सभी लोगों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक रखकर अत्याचारों को रोकता है। इसमें गरीबी समस्या का उद्‌घाटन कराके डॉ. लाल ने आधुनिक काल के समाज का भी चित्र उभारा है। वैसे देखा जाय तो भारत को सुवर्ण नगरी कहा जाता था, परंतु परकीय लोगों के आक्रमण से उन्होंने हमारे देश की सम्पति

लूट लूट कर भारत को कंगाल बनाया है। डॉ. लाल का वर्णित विषय गरीबी समस्या नाटक में उभरी है आधुनिकता के आगोश में आज का तत्कालिन समाज भी गरीबी के मारे मरमर कर जी रहा है। लौका को यह परिवेश बिलकूल पसंद नही। उसके खयाल से जो श्रम करेगा वह पेटभर रोटी खाएगा परंतु देवधर जैसे मुखिया उनसे केवल श्रम लेकर उन्हें भूखे पेट रखता है, तो लौका उन्हें भड़काता है। उन्हें उनका अधिकार दिलाने में सहायता करता है। एकता, राष्ट्रप्रेम, समानता के नारे लगाने वाले ही इस प्रथा को मोडते हैं। भाषणबाजी में सामान्य नागरिक को उनका हक दिलाने का वचन देनेवाले मंत्रीगण व्यासपीठ से उतरकर वे सारी बातें भूल जाते हैं जो उन्होंने कही थी। उपर एक, अन्दर एक इस व्यवहार से वे बर्ताव करते हैं।

नयी नैतिकता के नये प्रतिमान :

भारत संस्कृति प्रधान देश होने से संस्कृति प्रधान और धर्मप्रधान भी है। परन्तु हमने देखा है कि, इस संसार में प्रत्येक वस्तु परिवर्तनशील है। और इसी परिवर्तन सिद्धांत के अनुसार धर्म अध्यात्म आदि धारणाओं में भी परिवर्तन आ चुका है। आधुनिक जीवन सन्दर्भ में रूढ़ि परंपरा तथा अंधःश्रद्धा के विरूद्ध आवाज उठायी गयी है। नाटककार ने अपने लेखन के माध्यम से पुराने नैतिक की परिभाषा को ही बदल ड़ाला है। उन्होंने अपने मिथक नाटकोंद्वारा राजनीति, धर्मनीति, कर्मनीती, युद्धनीति आदि सभी को आधुनिकता में ढ़ालकर नये प्रतिमानों में उभारा है।

राजनीति :

राजनीति में डॉ. लाल ने अपने नाटक सूर्यमुख, उत्तरयुद्ध, नरसिंहकथा, कलंकी, मिस्टर अभिमन्यु तथा एक सत्य हरिश्चंद्र के अमूलाग्र परिवर्तन लाया है।

' सूर्यमुख ' का प्रद्युम्न असल में राजगद्दी का उत्तराधिकारी है परंतु वह प्रेमजाल में फंसकर उसे त्याग देता है। वस्तुतः राजा तो राजा है, वह अपने प्रजापर अधिकार जमाकर, अपने शौर्य के आधारपर एकाधिकार जमा सकता है परंतु प्रद्युम्न यह नहीं करता। वह अपने राजा के पूरे अधिकार त्यागकर अपनी प्रेमिका के पिछे चला जाता है। उसे राज्यलिप्सा नहीं है। वह केवल अपने प्रेम के पिछे पागल है। वह अपने सैनिकोंद्वारा अपनी प्रेमिका को लाकर उसे महारानी बना सकता था। परंतु डॉ. लाल ने उसे राजमुकुट त्यागकर नई राजनीति प्रस्थापित कर दी है। प्रद्युम्न को आधुनिक युवक दर्शाकर राजगद्दी का मोह नहीं दर्शाया है।

' उत्तरयुद्ध ' में डॉ. लाल ने नयी राजनीति अपनाई है। वास्तव में पाँच पांडवों को एकसूत्र में देखने की आदत है भारतवासियों को। परंतु डॉ. लाल ने इन्हें निजी स्वार्थलिप्सा में चित्रित किया है। युद्ध तो राज्यपाने के लिये होता है। द्रौपदी (शक्ति) को दु:र्योधन तथा दु:शासन जबरदस्ती ले जाते हैं। उसे बचाने के लिये - पाँचो पांडव आपसी संघर्ष में डूब गये हैं इसलिये नहीं जाते। इसप्रकार यह एक नयी राजनीति पेश करने का उद्दिष्ट है।

' नरसिंह कथा ' में हिरण्यकशिपु राजा है, अगर वह प्यार से सभी को दुलारता तो अवश्य ही लोकप्रिय हो जाता। परंतु केवल एकाधिकार प्रस्थापित करके विरोधकों को समाप्त करना मात्र जिसका उद्देश्य हों वह क्या राजनीति को अपनाएगा ? वैसे तो अपने संतान के प्रति प्रत्येक माता-पिता को अपार प्यार रहता है, परंतु हिरण्यकशिपु अपने पुत्र को भी शत्रू समझकर बंदीगृह में डालने की आज्ञा देता है, यह नये प्रतिकोंकी पहचान नहीं तो और क्या है ?

' कलंकी ' का अवधूत भी राजा है। वैसे कोई प्रेतात्मा सामान्य जनतापर राज नही कर सकता परंतु नयी चेतना को जगानेवाला यह कल्पित मिथक यह सिद्ध करता है कि, प्रेतात्मा ने शासन करके लोगोंपर विजय पा ली है। नाटक के अन्त में लोग जागरूक होकर उसे सवाल पूछते हैं तो प्रेतात्मा उन्हें धूत्कारता है और उन्हीं को दोषी ठहराता है। सामान्य जनता उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती, उसें प्रेतात्मा को मोक्ष भी नहीं मिलता। आधुनिक जीवन की त्रासदी इसमें उभारी है।

' मिस्टर अभिमन्यु ' की त्रासदी भी बिलकुल आज के व्यक्ति की त्रासदी है। व्यक्ति अपने मनपसंद जीना चाहता है, परंतु वह जी नहीं सकता। उसे केजरीवाल जैसे ठक तथा गयादत्त जैसे भ्रष्टाचारी कहीं न कहीं दबोच लेते हैं। केवल आत्मा झटपटाने से काम नहीं चलेगा कर्म भी उसीके साथ करना चाहिये। राजनीति की सत्ता पलटानेवाला गयादत्त राजन जैसे भोलेभाले व्यक्ति को आसानी से नहीं जीने देगा। भारत की मौजूदा समाजव्यवस्था, राज्यव्यवस्था षड्यंत्र जैसी रची जा रही जिसका पौराणिक नाम है चक्रव्यूह। राजन की वितृष्णा राजनीति के प्रति है, परंतु आधुनिक व्यक्ति की वितृष्णा स्वत: के हीनपन में है। तत्कालिन परिस्थिती में व्यक्ति कुछ भी नही कर सकता।

' एक सत्य हरिश्चंद्र ' की राजनीति भी इसी आधुनिकता पर दृष्टिगोचर होती है। इस नाटक को लोका परिस्थिती को पहचान लेता है। सामान्य जन-जीवन को जगाकर उन्हें अपना अधिकार दिलाता है। इन्द्र-देवधर को भी उनकी जगह दिखाकर अपने अधिकार प्रस्थापित करता है।

देवधर यह बात स्वीकार नहीं करता तो उसीके आदमी को-जीतन - को अपनी तरफ देखकर संतुष्ट हो जाता है। आखिर में जीत लौका की होती है। नाटक में तो लौका की जीत दिखाई परंतु आधुनिक जीवन में ऐसे व्यक्ति हार जाते हैं। यही नई नैतिकता है।

धर्मनीति :

डॉ. लाल ने परंपरागत जो धर्मनीति अपनाई गयी थी उसे नये प्रतिमानों में ढ़ाला है। उनका नाटक ' सूर्यमुख ' धर्मनीति पर ही आधारित है। धर्म के माध्यम से देखा जाय प्रद्युम्न तथा वेनुरती माँ-पुत्र है, परंतु डॉ. लाल ने इसमें नयी नैतिकता की प्रतिष्ठापना करके उनमें प्यार की ज्योत जगा दी। वास्तव में वेनुरती के मन में प्रद्युम्न के प्रति वात्सल्य होना चाहिये, परंतु वह प्रियतम की भाँति उसे चाहती है। यही तो रचनाकार ने नये नैतिकता के प्रतिमान सजग कर दिये हैं। उन्होंने नाटकद्वारा माँ-पुत्र का प्रेम दिखाकर नैतिकता की नयी व्याख्या प्रस्तुत की है। पूरी द्वारिका नगरी उनके प्रेन के खिलाप है तो केवल एक वृद्ध तथा दुर्गपाल ही ऐसे पात्र उपस्थित किये हैं जो उनको सहायता करते हैं। मानसिक सहायता करता है वृद्ध तथा भौतिक सहायता करता है दुर्गपाल।

' यक्षप्रश्न ' तथा ' उत्तरयुद्ध ' में नई नैतिकता अपनाई है। वैसे नियती ने महाभारत में नयी नैतिकता प्रस्थापित की है। क्योंकि भारतीय संस्कृति में एक स्त्री के पाँच पती नहीं माने गये। ' यक्षप्रश्न ' की नीति थी जब युधिष्ठिरसेपूछा गया कि किसे जिन्दा करू तो उसका सगाभाई अर्जुन या भीम को मांगे, परंतु युधिष्ठिर सहदेव जो उसका सौतेला भाई है - जीवित करने को कहता है, यही बात नई नैतिकता के रूप में उभरकर आई है। ' उत्तरयुद्ध ' के पांच पांड़व स्वार्थी दिखाये गये हैं। मूल महाभारत में ऐसी स्थिती नहीं दर्शायी गयी। अपनी पत्नी-शक्ति-द्रौपदी- को अपने चचेरे भाई के हाथों से बचाने के बजाय केवल विचार करते है, जो कार्य की अपेक्षा तुच्छ है। यहाँ इस नाटक में विचार नहीं क्रियाव्यापार चाहिये ताँकि भविष्य बदला जा सके, पर नहीं बदलता यही नये नैतिकता के पहलू हैं।

डॉ. लाल का अगला नाटक है ' नरसिंह कथा ' जिसमें धर्म कहता है कि पुत्र की सुरक्षा जिम्मेदारी पितापर है, पर हाय रे स्वार्थ, इस स्वार्थ ने राजगद्दी के लालच ने अपने पुत्र को भी विरोधी समझा, अपने-आपको उचित समझकर पुत्र के विरोध में पिता खड़ा रहा या अत्याचारी पिता को पुत्र सही मार्गपर नहीं ले जा सका। पुत्र की रक्षा करना पिता का धर्म है, पर यहाँ धर्म की नई नीति

अपनाई गयी है। ' कलंकी ' नाटक में भी यही बात है। अकुलक्षेम का पुत्र हेरूप अपने पिता के अत्याचार को नही देख सकता। हेरूप तो यह भी नही जानता कि, अकुलक्षेम ही अवधूत है। अवधूत अपने पुत्र को पहचानता है, उसे अपने मार्ग से दूर हटाने के लिये वह देहदंड देता है। यह बात धर्मनीति के विरूद्ध है, डॉ. लाल ने अपने नाटक में आधुनिकता के माध्यम से यही नये नैतिकता के प्रतिमान दर्शाये हैं।

' मिस्टर अभिमन्यु ' नाटक की भी यही त्रासदी है। पुत्र को सही मार्गपर चलने को सिखाना पिता का धर्म है परंतु राजन के पिता ही अपने पुत्र को केजरीवाल और गयादत्त जैसे भ्रष्टाचारियों के हाथों में सौंप देते हैं। दुनियादारी समझाते हैं, भ्रष्टाचार करने को उद्युक्त करते हैं। पत्नी भी ससुर का साथ देकर राजन को भ्रष्टाचारी मार्गपर चलने को उकसाती है। दोनों की कैची में राजन मजबूर होता है।

' एक सत्य हरिश्चंद्र ' नाटक में देवधर गांव का मुखिया है। उसे सभी से समान बर्ताव रखना चाहिये। परंतु धन की लालच, बडप्पन की लालच भेदाभेद करता है। हरिश्चंद्र की मूलकथा में जो हरिश्चंद्र सत्य की परीक्षा देते देते समाप्त हो गया आधुनिक हरिश्चंद्र डटकर विरोध करके सत्य की परीक्षा देने से इनकार करता है, वह कहता है, कि हमने आजतक जो जिन्दगी जी है, वही तो सत्य है। विश्वामित्र आधुनिकता में इन्द्र की बजाय हरिश्चंद्र की तरफदारी करके उसके पक्ष में देवधर का विरोध करता है। पुराण कथा को आधुनिकता में ढालकर विश्वामित्र, इन्द्र, हरिश्चंद्र सभी के चरित्र को नये नैतिकता में उभारा है। आज के जीवन में सत्य को पहचानना अन्याय का विरोध करना हर व्यक्ति का कर्तव्य है।

युद्धनीति :

डॉ. लाल के प्रत्येक मिथक नाटक में नयापन अवश्य झांकता है, और वह नयापन अष्टपैलू होता है। युद्धनीति के क्षेत्र में उनका पहला मिथक नाटक ' सूर्यमुख ' में अजब वर्णन किया गया है। नाटक में वर्णित युद्ध दो राजा या केवल राजगद्दी के लिये किया गया युद्ध नही है। इसमें तो अपने स्वार्थ के लिये दूसरे की हत्या करके नगर को ही डूबा देनेवाले व्यक्ति है। इस नाटक में वर्णित कालसमुद्र नगर के लोगों ने निर्माण किया हुआ है। इसको रोकना केवल प्रद्युम्न का काम था और वेनुरती उसे यही बात समझाती है। द्वारिका में रचित षड्यंत्र का नाश करना है प्रद्युम्न को। यह

तो युद्ध की पृष्ठभूमी है। यही नूतनता है - आधुनिकता है।

' उत्तरयुद्ध ' की युद्धनीति इससे भी बढ़कर है। पांचो पांडवों को मालूम है कि द्रौपदी छीन ली गयी है उसे फिर से पाने के लिये पर्याय है युद्ध। पर पांडव आपसी संघर्ष में ही इतने डूब जाते हैं कि, वे द्रौपदी को - उसकी चीख को सुनते हैं। नहीं केवल विचार करते रहते हैं। आधुनिक व्यक्ति का चरित्रांकन करके डॉ. लाल ने आज के पुरूष किसप्रकार नामर्द है यह बताया है।

' नरसिंह कथा ' की युद्धनीति गणतंत्र के विरूद्ध की है। अगर गणतंत्र हो गया तो राजा को हुमूमशाही कैसे चलेगी ? केवल हुकूमशाह बनने के लिये हिरण्यकशीपु विरोधियों को बंदीगृह में डालकर एकाधिकार स्थापित करता है। ये अजब युद्धनीति है। किसी को कुछ कहने सुनने का अधिकार भी नहीं। आधुनिक राजनीति में भी यहीं वास्तविकता दृष्टिगोचर होती है। समिती के उपर समिती स्थापन करके तहकिकात कराके 5/10 सालोंबाद भी किसी बात का निर्णय नहीं कर पाते इसप्रकार नेता या राजा दिशाहीन होने से जनसामान्य को भी दिशाहीन बना देते हैं।

' कलंकी ' का भी यही हाल है। केवल एकाधिकार स्थापन करने के लिये शव के उपर शव स्थापित करके साधना पूरी करने का बहाना चल रहा है। वास्तव में यह शवसाधना कभी भी पूरी नहीं होगी। ये समाप्त जरूर होगी, लेकिन जब जब जनसामान्य जागृत रहकर डटकर ऐसे निरंकुश नेता या राजा का सामना करेगा।

उनका आखरी मिथक ' एक सत्य हरिश्चंद्र ' में भी आधुनिकता को सामने रखकर नये प्रतिमानों में युद्धनीति प्रस्तुत की है। वास्तविक योद्धा है लौका जो देवधर के विरोध में लड़ाई लड़ता है। अपनी तरफ सेना को मजबूत बनाकर देवधर जैसे महायोद्धा को हराता है, उसे ललकारता है। नाटक के माध्यम से नवटंकी खेलकर इन्द्र को आव्हान देता है। अपना स्थान कायम करता है। सत्यनारायण की कथा को सत्य हरिश्चंद्र की कथा में ढालकर नयापन, नये प्रतिमान उभारता है।

इसप्रकार डॉ. लाल ने अपने नाटकोंद्वारा नयी नैतिकता के नये प्रतिमानों को उभारकर अपना अलग स्थान नाटक साहित्य में बनाया है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचनों से निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि -

1) परिवर्तन प्रकृति और मानव का स्थायी भाव है। अतः आधुनिकता परिवर्तनशीलता का प्रमुख अंग है।

2) यद्यपि परंपरा और आधुनिकता में काफी अंतर है फिर भी वे एक दूसरे के विरोधी न होकर परस्पर पूरक ही है।

3) साहित्य और इतिहास का परस्पर संबंध होकर भी परंपरागत इतिहास से विद्रोह ही आधुनिकता की पहचान है।

4) यद्यपि मिथक नाटकों का मूल स्त्रोत इतिहास या पुराण होता है तो भी उसमें आधुनिकता के दर्शन होते हैं, जो यथार्थ की भावभूमि पर अधिष्ठित होते हैं।

5) डॉ. लाल के मिथक नाटकों में आधुनिक युगबोध का चित्रण प्रचुर मात्रा में मिलता है। सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक और नैतिकता के परिप्रेक्ष्य में डॉ. लाल के नाटकों में आधुनिक युगबोध का जो चित्रण प्रस्तुत हुआ है वह आज के मानव जीवन की गाथा, व्यथा तथा विसंगती का ही प्रतीफलन है।

6) डॉ. लाल के मिथक नाटकों का आधुनिक युगबोध कोरा युगबोध नहीं, बल्कि मानव जीवन के यथार्थ को संम्पृक्त कर उसकी गतिशीलता का परिचायक है। इस युगबोध में पुरातन मिथकों की नयी व्याख्या प्रस्तुत की है। जो युगबोध सापेक्ष है। डॉ. लाल के मिथक नाटक आधुनिक युगबोध की कसौटी पर खरे उतरते हैं।

अध्याय : 4

संदर्भ सूची -

(1) आधुनिकता और मोहन राकेश - डॉ. उर्मिला मिश्र, पृ। प्र. संस्क. अनुलेखन 1986

(2) आधुनिक हिंदी - मराठी नाटकों में युगबोध - मदनमोहन भारद्वाज पृ.11 प्र. संस्क.

(3) नयी समीक्षा नये संदर्भ - डॉ. नगेंद्र पृ. 67 द्वि. संस्क. 1974

(4) हिंदी साहित्य-कोश-भाग-। सम्पा. डॉ. धीरेंद्र वर्मा पृ. 111 द्वि.संस्क. संवत 2020

(5) आधुनिक न्दी-मराठी नाटकों में युगबोध डॉ. मदनमोहन भारद्वाज पृ. 10 प्र.संस्क. 1986

(6) वही पृ. 17 प्र. संस्क. 1986

(7) आधुनिकता और मोहन राकेश - डॉ. उर्मिला मिश्र पृ. 9 प्र. संस्क. अनुलेख

(8) वही पृ. 12

(9) वही पृ. 17

(10) वही पृ. 6 - 7

(11) वही पृ. 5

(12) हजारी प्रसाद द्विवेदी, ग्रंथमाला खण्ड 9 (निबंध सामज्यसकी खोज : परंपरा और आधुनिकता) सम्पा. डॉ. मुकुंद द्विवेदी पृ. आदि 2 पृ. 359 संस्क.

(13) समकालीन कविता : वैचारिक आयाम - डॉ. बलदेव वंशी पृ. 62 प्र. संस्क. 1986

(14) कलंकी - डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल पृ. 86 प्र. संस्क. 1969

(15) मिथक और स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक - रमेश गौतम पृ. 100 प्र. संस्क. 1989

(16) सूर्यमुख - डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल पृ. 100 प्र. संस्क. 1977

(17) मिथक और स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक - रमेश गौतम पृ. 77-78 प्र. संस्क. 1989

(18) नरसिंह कथा - डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल पृ. 93 प्र. संस्क. 1975

(19) वही पृ. 92-93,

(20) कलंकी - डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल पृ. 9 प्र. संस्क. 1969

(21) मिस्टर अभिमन्यु - डॉ. लक्ष्मीनारायण पृ. 73 प्र. संस्क. 1980

(22) स्वतंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य का विकास डॉ. लक्ष्मीसागर वापलैय पृ. 188 प्र. संस्क. 1988

(23) मिथक और स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक - रमेश गौतम पृ. 101 प्र. संस्क. 1989

(24) सूर्यमुख डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल पृ. 64 प्र. संस्क. 1977

(25) मिथक और स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक पृ. 74 प्र. संस्क. 1989

(26) मिस्टर अभिमन्यु डॉ. लाल पृ. 26 - 27 प्र. संस्क. 1980

(27) वही श्रीकांत वर्मा (पृ. अनुल्लेख)